श्री पञ्चस्तवी

श्लोक तथा कश्मीरी भाषा में अर्थ



रचतक

पं० जीयालाल धर (सराफ), भटयार,
श्रीनगर काश्मीर

प्रकाशकः

महाराज कृष्ण धर–राज्ञा प्रसाद कोल

मूल्य—।।।)
Price 75 nP.

Kashmir Mercantile Press, Srinagar.

प्रार्थना

माज्य भवान्य छम म्य बूड चियानि आश
म्यति भोजतम च जारी
छुस प्रथर प्योमुत तुलुम थुद
कासतम म्य लाचारी ॥ १ ॥

पाद्य सेवन करः उन्य भ च्योन
लगै पादन च्य पारी
ध्यान दारः चोन हृदयस मञ्ज
जन मिहित च तिलकधारी ॥ २ ॥

उन्य भ गिवः च्यनि कशिरिस मञ्ज
गुण त लच्चिण सारी
पादनूय च्यानिन भ लागै लोल पोश चारि चारी ॥ ३ ॥

च्यानि दर्शन भापत म्य गोम इचकाल प्रारि प्रारी
हावतम म्य मुख कासतम म्य जन्म
जनमन हून्ज खारी ॥ ४ ॥

कुर म्य पञ्चस्तवी तरजमः कशिरिस मञ्ज जारी
युथ उपकार वाति भक्तिन
म्यति भनि च्यनि यारी ॥ ५ ॥

ॐ नमः त्रिपुर सुन्दर्यै ।

—: लघुस्तवः :—

ऐन्द्रस्येव शरासनस्य दधती मध्ये ललाटं प्रभां
शौक्लीं कान्तिमनुष्णगोरिव शिरस्यातन्वती सर्वतः ।
एषासौ त्रिपुरा हृदि द्युतिरिवोष्णांशोः सदाहः स्थिता
छिन्द्यान्नः सहसा पदैस्त्रिभिरघं ज्योतिर्मयी वाङ्मयी ॥१॥

اندرازہ سنزی کمان ہش دِفت منز للاٹس دارانی
چندرمس ہش سفید ورن دقیم۔ شیرس پٹھ لیس چمکانی
ہردیس میس سرپہ سندی پاٹھی۔ چمکونی دِفتی روزانی
سُوی ترپور سندری سانس ہردیس منز روزتن
سوی جُوتی سروپ سرسوتی سروپ۔ بنتھ اسی ٹھیکتن
ترن یدن ہندی اُوگرہ کن۔ تمی ودھ پاپ سانی ژٹتن

या मात्रा त्रपुसीलतातनुलसत्त[illegible] स्पर्धिनी
वाग्बीजे प्रथमे स्थिता तव सदा तां मन्महे ते वयम् ।
शक्तिः कुण्डलिनीति विश्वजनन व्यापार बद्धोद्यमा
ज्ञात्वेत्थं न पुनः स्पृशन्ति जननीगर्भेऽर्भकत्वं नराः ॥२॥

پُوسہ زاوجہ تریلی لنجی ہنزی تاری ہش پیتھ چھُ بیلاو
سارڈھ تری دار زاوج بِنتھ اسہ کُنڈلنی شکھتی چھو نانہ
ییزہ اکھرس منز کلا یُوسہ ٹھیکت چھی آسانی
سُوی کلا جگت پیدہ کرنس پیٹھ آسونی اُودیوگی
امِہ کوی دھیان لیس منش زانی کرسنا کری سپرش
گربھ بہاوس شری بہاوس ادہ کر بنی بیہ منش

दृष्ट्वा सम्भ्रमकारि वस्तु सहसा ऐ ऐ इति व्याहृतं
येनाकूतवशादपीह वरदे बिन्दुं विनाप्यक्षरम् ।

तस्यापि ध्रुवमेव देवि तरसा जाते तवानुग्रहे
वाच: सूक्ति सुधारसद्रव मुचो निर्यान्ति वक्राम्बुजात् ॥३॥

ہی دیوی یدٕ کانہہ خوفناک چیز وچھت جلد جلد کری ائہ ائے یندہ روتی سیدی مطلب تس تی حل
ییٚ مجراتس تی منتر بنی تس چون انو گره نیری وانی تسندی مُوکھ لشر چھٹہ امرتہ کوی شوسرہ

यन्नित्ये तव कामराजमपरं मंत्राक्षरं निष्कलं
तत्सारस्वत मित्यवैति विरल: कश्चिद्बुधश्चेद्भुवि।
आख्यानं प्रति पर्व सत्य तपसो यत्कीर्तयन्तो द्विजा:
प्रारम्भे प्रणवास्पद प्रणयिता नीत्वोच्चरान्ति स्फुटम् ॥४॥

ہی نتی روپی دویم منتر چون کامہ راجہ ناوه آسون سوی منتر لشکل نبتھ کانہہ پتھوی پٹھ چھوزانہ ون
شوی گوسار سوتر بیج اکھر ست تپ ہی ریشی چھی پران اوتم پردن پٹھ برہمن اُتُوک ویاکھیان چھی کران
واتہ ناوت اُدیچہ جاے پٹھ ہی منتر اوشچارن کران

यत्सद्यो वचसा प्रवृत्ति करणे दृष्ट प्रभाव बुधै:
तार्तीयीक महं नमामि मनसा त्वद्बीजमिन्दु प्रभम्।
अस्त्वौर्वोऽपि सरस्वती मनुगतो जाड्याम्बु विच्छित्तये
गौ: शब्दो गिरि वर्तते स नियतं योगं विना सिद्धिद: ॥५॥

تریمی بیجہ اکھر وک مہاوانی کھلنس پٹھ گاٹُل وچھان تتھ اکھرس چندرہ دفتی سنتس چھس مٔن کن پرنام کران
سروپ نبتھ سو یوگ دانائے روتی بدھی دیوان مورکھ روپی پاپیس گالنہ باپت واڑوناثی اگن بنان

एकैकं तव देवि बीजमनर्घ सव्यञ्जना ऽव्यञ्जनं
कूटस्थं यदिवा पृथक् क्रमगतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काम मपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं
जप्तं वा सफलो करोति सहसा तं तं समस्तं नृणाम् ॥६॥

ہی دیوی تس پری چون بیجہ اکھر بُد کوٗنہی دوشہ رکوس یا دوشہ سنس اُلٹہ سیوتہ یا یو نیونی
یمی یمی کامنائے باپت یس منتش آسی جپان تس منتش اوہ سرس منز ساری مطلب چھی نیران

वामे पुस्तक धारिणी मभयदां साक्षिस्रजं दक्षिणे
भक्तेभ्यो वरदान पेशल करां कर्पूर कुन्दोज्ज्वलाम् ।
उज्जृम्भाम्बुज पत्र कान्त नयन स्निग्ध प्रभालोकिनीं
ये त्वामम्ब न शीलयन्ति मनसा तेषां कवित्वं कुतः ॥७॥

کھوورس تھس منز چھ پوستک درامُت ہی بھوانی چھنس اتھس جپ مال بُرِسیت ابھئے دیوانی
یاکھ اتھ چون بپوش زَن بھکتن دَرِ دیوانی پھولتہ پپوشہ نتر دُ زَن ژہ بھکتن وچھانی
یُس یِیُ دھیان کری چون امبا من تس پرس بنانی آسہ کانہہ سو یتھ جگتس منز تس چھی دانا وناتی

ये त्वां पाण्डुर-पुण्डरीक पटल स्पष्टाभिराम प्रभाम्
सिञ्चन्तीममृत द्रवैरिव शिरो ध्यायन्ति मूर्ध्नि स्थिताम् ।
अश्रान्तं विकटस्फुटाक्षरपदा निर्याति वक्त्राम्बुजात्
तेषां भारति! भारती सुरसरित्कल्लोल लोलोर्मिवत् ॥८॥

یُس سفید پپوش ڈلہ پاٹھ خوش ژہ دِتی وچھانی ورشُن کران امرت کوُی چھٹہ تہجُئے ایوانی
یُس یِیُ دھیان کری برہماندس منز چھ تس نیرانی بے روک پاٹھ تسندی مکھ نشہ سرسوتی ہنز وانی

ये सिन्दूर पराग पुञ्ज पिहितां स्वतेजसा द्यामिमा-
मुर्वीं चापि विलीन यावक रस- प्रस्तार मग्नामिव ।
पश्यन्ति क्षणमप्यनन्य मनसा स्तेषामनङ्ग-ज्वर-
क्लान्तास्त्रस्त-कुरङ्ग-शावकदृशो वश्या भवन्ति स्फुटम् ॥९॥

چانی تیزہ کِن یُس اکھا وچھی سندری برھمی آکاش پرتھوی لاچھی رنگہ فیٹھ وچھی آسس منز یاس
ژہ ڈلونی منہ کھنہ ماترس یُس یِیُ دھیان دارانی مار سیٔ شکھنی تریہ روپ بنتھ تمن چھی قابلہ ایوانی
تمہ شکھنی بمن کامد بو تیر سیت ہند کرانی تتھ پاٹھ یتھ خو چھیت مرگہ بچہ کانہہ رمانی

चञ्चत्काञ्चन कुण्डलाङ्गद धरा मा ऽबद्ध काञ्चीस्रजं
ये त्वां चेतसि तद्गते क्षणमपि ध्यायन्ति कृत्वा स्थितिम्।
तेषां वेश्मसु विभ्रमाद् ऽहरह : स्फारी भवन्त्य श्चिरं
माद्यत्कुञ्जर कर्ण ताल तरला: स्थैर्यं भजन्ते श्रिय: ॥१०

چمکونہ سونہ مختہ کنواجی مچھ بندژہ لاگانی — سونہ سنز تاگر پزلہ ون چھک ژہ کمرس گنڈانی
یُس یُی دھیان چون منز منس یکوی تتھ پاٹھہ یُس لگانی — تس روزی شاہانہ شوکت گھرس رتہ تا مت لچھمی
سو لچھمی یوسہ مدھستی کنہ کی چرژہ ہج پاٹھہ چنچل آسانی — سارِ سے سمیدا یہ تس پرتس قرار کرتھ چھی روزانی

आभट्या शशिखण्ड मण्डित जटा जूटां नृमुण्ड स्रजं
बन्धूक प्रसवारुणाम्बर धरां प्रेतासनाध्यासिनीम्।
त्वां ध्यायन्ति चतुर्भुजां त्रिनयना मापीन तुङ्ग स्तनीं
मध्ये निम्न वलित्रयाङ्कित तनुं त्वद्रूप संवित्तये ॥ ११॥

شوبھونی چانی جٹہ مُوکٹہ نال منشہ کلہ مالہ سُس — بندہ دقر پوشہ رنگہ سرخ پوشاک تٔہ مُردہ آسنہ سُس
کمرس تاگر گنڈتھ چتر بھج تری نتر دارانی — چون سروپ زانہ باپت یُی دھیان بھکتی چھی کرانی

जातोऽप्यल्प परिच्छदे क्षितिभुजां सामान्य मात्रे कुले
नि:शेषावनि चक्रवर्ति पदवीं लब्ध्वा प्रतापोन्नत:।
यद् विद्याधर वृन्द वन्दितपद: श्री वत्सराजोऽभवत्
देवि! त्वच्चरणाम्बुज प्रणतिज: सोऽयं प्रसादोदय : ॥१२

کانہہ راجا معمولی کُلس منز آسہ زامُت — کُل پرتھوی پٹ کران آسہ راج آسن پراوُمت
تس چکر ورتس یادان دیوتا چھی یوزانی — چھو مہا تس چانی یاد پوزانے منز مہربانی

चण्डि! त्वच्चरणाम्बुजार्चन विधौ बिल्वीदलोल्लुण्ठन
त्रुट्यत्कण्टक कोटिभि: परिचयं येषां न जग्मु: करा:।

ते दण्डांकुश चक्र चाप कुलिश श्रीवत्स मत्स्यांकितै;
र्जायन्ते पृथिवीभुजः कथमिवाम्बोज प्रभैः पाणिभिः॥१३॥

ہی ژنڈی چانی ژرن پوزایہ بیٹھ لیس انانی بلہ پوش ژرٹ ژرٹ کنڈی بیت اتھ لیس چھی ژھنانی
ڈونگ تہ تیر کمانی ہند نشانہ یس کنڈی خشہ سیت وسانی تتھ اتھ سُس پرژھن بیہ زنمہ راجہ مہاراج بتانی

विप्राः क्षोणिभुजो विशास्तदितरे क्षीराज्य मध्वासवै;
त्वां देवि! त्रिपुरे! परापरमयीं संतर्प्य पूजाविधौ।
यां यां प्रार्थयते मनः स्थिरधियां तेषां त एव ध्रुवं
तां तां सिद्धिमुवाप्नुवन्ति तरसा विघ्नैरविघ्नी कृता;॥१४॥

برہمن راجہ ویش یا شُدر چانی پوزا کرانی دودھ گیو یا چھ شراب پوزائے کن ژہ ارپن کرانی
شردھا یہ کن یی کینژھا منگن چھک ضرور تمن دیوانی بے روک پاٹھہ وگنہ رستوی سِدھی سعہ براوانی

शब्दानां जननी त्वमत्र भुवने वाग्वादिनीत्युच्यसे
त्वत्तः केशव वासव प्रभृतयोऽप्याविर्भवन्ति स्फुटम्।
लीयन्ते खलु यत्र कल्प विरमे ब्रह्मादयस्तेप्यमी
सा त्वं काचिदचिन्त्य रूप महिमा शक्तिः परा गीयसे॥१५॥

ہی ماتا ژ بھونس منز شبد روپ ژہ آسانی جگتس منز ناد چونوی سرسوتی چھی ونانی
ژی نش کیشو اندراجہ دیوتا پرکٹ بنانی کلپہ انتس برہماد ژی نشہ لے گژھانی
کوستانیہ تہ سرنی مہامس تہنز شکھتی چھی ونانی

देवानां त्रितयं त्रयी हुतभुजां शक्तित्रयं त्रिस्वरा-
स्त्रैलोक्यं त्रिपदी त्रिपुष्करमथो त्रिब्रह्मवर्णास्त्रयः।

यत्किञ्चिज्जगति त्रिधा नियमितं वस्तु त्रिवर्गात्मकं
तत्सर्वं त्रिपुरेति नाम भगवत्यन्वेति ते तत्वत ॥१

دیون منز ترِ نوُے دیو ژِ ئی اگنن منز ترئی اگن ژِ ئی — شکتی منز ترئی شکتی ژِ ئی پُرن منز ترِ نوی پُر ژِ ئی
ورنن منز ترئی ورن ژِ ئی گنگا جمنا سرسوتی ژِ ئی — لو بوہ سوہ گایتری ژِ ئی ست چت آنند ژِ ئی
یِی کینہ اَہ قاعدس منز ترِ گُن سروپ — سو سو رُوی پتہ پتہ پکان ژِ ئی

लक्ष्मी राजकुले जया रणभुवि क्षेमङ्करी मध्वनि
क्रव्याद द्विप सर्प भाजि शवरी कान्तार दुर्गे गिरौ।
भूत प्रेत पिशाच जम्बुक भये स्मृत्वा महा भैरवीं
व्यामोहे त्रिपुरां तरन्ति विपद-स्तारां च तोय प्लवे ॥१

راز گرن منز ژہ لچھمی۔ جنگہ منز رن بھومی — الٹہ ووتی کلیانہ ردپی خوفناک جانورن منز شکاری ژِ ئی
کوہن پیٹھ چھک ژہ دُرگا پشاچن منز بھیروی — یم اکثہ جایہ بھیان چھ سُرن تمن ژہ آید دور کرانی

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी
मातङ्गी विजया जया भगवती देवि शिवा शाम्भवी
शक्तिः शंकरवल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी
ह्रींकारी त्रिपुरा परा परमयी माता कुमारीत्यसि ॥१

مایا ژِ ئی کُنڈلنی ژِ ئی کریا ژِ ئی۔ مدھومتی ژِ ئی — کالی ژِ ئی۔ کلا ژِ ئی۔ مالنی ماتنگی ژِ ئی
وجیا ژِ ئی۔ جیا ژِ ئی۔ اختیار وا جینہ ژِ ئی — چت سروپ ژِ ئی سامرتھ ژِ ئی شامبھوی شکتی ژِ ئی
شنکرسنز ماٹھ چھک ژِ ئی سرسوتی بھیروی ژِ ئی — ہریمہ شکلہ پرا پر ترپرا۔ ماتا ایم روپ ژِ ئی

आद्यैः पल्लवितैः परस्परयुतैः द्वित्रि क्रमाद्यक्षरैः
काद्यैः क्षान्तगतैः स्वरादिभिरथो क्षान्तैश्च तैः सस्वरैः

नामानि त्रिपुरे! भवन्ति खलु यान्यत्यन्त गुह्यानि ते
तेभ्यो भैरवपत्नि विंशति सहस्रेभ्यः परेभ्यो नमः ॥१६॥

अ پٹھ سارنی اکھرن دوی ترِی کرمہ ملناوت ک پٹھ ہُ تانیٖ شبدہ کُس رلاوت ناوچانی بناوٗ
ہی ترٚ پرائی وۄنہ ساسن وچانی رہسہ روپ بنانی ہی بھیرو پتنی تمن یہ وحسہ ناون پرنام کرانی

बोद्धव्या निपुणं बुधैः स्तुतिरियं कृत्वा मनस्तद्गतं
भारत्या त्रिपुरेत्यनन्य मनसा यत्राद्यवृत्ते स्फुटम् ।
एक द्वित्रिपद क्रमेण कथित स्त्वत्पाद संख्याक्षरैः
मन्त्रोद्धार विधि विशेष सहितः सत्संप्रदायान्वितः ॥२०॥

جانِنی چھوی گاٹلن ییٚ تو چیٚئی کُن من لگاوت
چانِن پادن ہندی شمار کیو اکھرو کن ملناوت
گوڈنیکہ دوہِمی ترییمی پدہ کرمہ منتر وۄہارودھ بناوت
رتی سمپرداے سُس ییٚ تواوُن مہ ژئی کُن من ٹھیکراوت،

सावद्यं निरवद्यमस्तु यदि वा किं वानया चिन्तया
नूनं स्तोत्रमिदं पठिष्यति नरो यस्यास्ति भक्तिस्त्वयि ।
संचिन्त्यापि लघुत्वमात्मनि दृढं संजायमानं हठात्
त्वद्भक्त्या मुखरी कृतेन रचितं यस्मान्मयापि ध्रुवम् ॥२१॥

ہندائی سُس یا ہندائی رُس نکرا اچھ تراوتھ
یس ییٚئی تو ترکانہہ منش پری آسِس بھکتی چانی
پنُنس ریانس لۄکٕٹر زانِت ہتی درِ ڑھتا پراوم
چانی بھکتی ہندی زورہ بکواسی بنتھ ییٚ توتا بناوم

—:o:—

चर्चा स्तवः

—: ॐ नमः त्रिपुर सुन्दर्यै :—

आनन्द सुन्दर पुरन्दर मुक्त माल्यं
मौलौ हठेन निहितं महिषासुरस्य ।
पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जु-
मञ्जीर शिञ्जित मनोहर मम्बिकायाः ॥ १ ॥

پادچانی سُندر آنند دایک اندراجن تراو یتھ مُختہ مال
یمہ سیت زیر دیچپت مہشاسُرسی کھتہ ماترس نزروُت سوپاتال
سُوئی رُونیہ پاد چون روزتن مہ ہردیس
یُتھ بہ امبکائی بوزہ شرونیہ شرونیہ تال
سوی منوہر پاد بنتن مہ ہیتوب جے کارک مہ ہاوتن کمال

सौन्दर्य विभ्रमभुवो भुवनाधिपत्य-
संपत्ति कल्प-तरव स्त्रिपुरे ! जयन्ति ।
एते कवित्व कुमुद प्रकराव बोध-
पूर्णेन्दव स्त्वयि जगज्जननि प्रणामाः ॥ २ ॥

یم پرنام سُندریکہ ولاسک جاے یتھ تہندی شمار کرنہ ایوان
ترن بونن ہندی راج سمپدایہ ہندی کلپہ ورکھ ہی یم پرنام چھی بنان
یم پرنام کوتائی رُوپی کمُدہ پوشہ پھولراونہ بایت چندرمہ چھی بنان
ہی جگت زننی وانتنے تہ میانی یتھ ہی پرنام چیس بتہ ژی کُن کران

देवि ! त्वदी यमतिकरे कृत बुद्धयस्ते
वाचस्पति प्रभृतयोऽपि जडी भवन्ति ।
तस्मा न्निसर्ग जड़िमा कतमोऽहमत्र
स्तोत्रं तव त्रिपुर तापनि पत्नि! कर्तुम् ॥ ३ ॥

چانی توتاکرنس پٹھ چھونہ سامرتھ	برہسپت تہ دیوتا جڈ بنا نی !
ہی ترن تاپن گالوینہ چھُس ہورکھ بہ آستھ	کتہ سامرتھ بہ کرہ توتا چانی

मात:। तथापि भवतीं भवतीव्रताप
निच्छित्तये स्तुति महार्णव कर्णधार:।
स्तोतुं भवानि! स भवच्चरणार बिन्द -
भक्तिग्रह : किमपि मां मुखरी करोति ॥ ४॥

ہی ماتا زانت یئی سمارہ کٹھن دُوکھ	چھٹنہ باپت کرہ وم توتا یئی چانی
یہئے توتا یتھ سمسار ساگرس	بنی میسانی ناوبیہ ہانج میانی
چانی پاد کملہ کے لولچہ آوشہ	بکواسی ہیہو چھُس توتا کرانی

सूते जगन्ति भवती भवती बिभर्ति
जागर्ति तत्क्षयकृते भवती भवानि।
मोहं भिनत्ति भवती भवती रुणद्धि
लीलायितं जयति चित्रमिदं भवत्या: ॥ ५॥

برہما روپہ جگتس کران پیدہ ژی	وشنو رُوپہ پالن کران ژئ
رودرہ روپہ سمہار آخرس کران ژی	موہ دیوان تہ بیہ تتھ تی گالان ژئ
لیلائے یمہ چانی چھُوس وچھان رنگہ رنگہ	جے جے کار آسنئے چانن لیلا ینئ

यस्मिन्मनागपि नवाम्बुज पत्र गौरि !
गौरि! प्रसादमधुरां दृश मादधासि ।
तास्मिन्निरन्तर मनङ्ग शराव कीर्णा: -

सीमन्तिनी नयन सन्ततय: पतन्ति ॥ ६॥

ہی گوری ہمیوشہ رنگہ صفایس امرتہ نظر چھک ژہ ترا وانی
تس پیٹھ نتئ نیم سارئی یوٗ گنئ کامدیوس زن چھ وش گژھانی

पृथ्वीभुजोऽप्युदयन प्रवरस्य तस्य
विद्याधर प्रणाति चुम्बित पादपीठ: ।
यच्चक्रवर्ति पदवी प्रणय: स एष
त्वत्पाद पङ्कज रज: कणात्त: प्रसाद: ॥ ७॥

اودین راجس کھراوی پیٹھ کران ہیٹھ وذیادر تہ دیوتس پچھی آذین
چکرورتی عہدہ اوس تم پراومُت چانی یاد گردی ہندی انوگرہ سن

त्वत्पाद पङ्कज रज: प्रणिपात पूतै:
पुण्यै रनल्प मतिभि: कृतिभि: कवीन्द्रै: ।
क्षीर क्षपाकर दुकूल हिमावदाता
कैरप्यवापि भुवन त्रितयेऽपि कीर्ति: ॥ ८ ॥

ہی دیوی چانن ہمیوشہ پادن ہنزی گردی پیٹھ کرُہ ہمو پرنام
تم بنئے نرمل اوتم تیز بوٗز ہس داناُ اوتم کوی پراوتمو نام
دودھ چندرمہ ریشم وکستر بیہ شینہ پاٹھ صفا بنتھ ترن بونن منز بنئے نیکنام

कल्पद्रुम प्रसव कल्पित चित्र पूजा -
मुद्दीपित प्रियतमा मद रक्त गीतिम् ।

नित्यं भवानि ! भवती मुपवीणयन्ति
विद्याधरा: कनकशैल गुहागृहेषु ॥ ९ ॥

کلپہ ورکھ پوشو سیت چانی پوجا لولہ سیت چھ گیوان چانی گیت
نت سمیرکے گُفا نہ وپی گھرن منز وایان ودیادھر سوز تہ ساز گیت

लक्ष्मीवशी करण कर्मणि कामिनीना -
माकर्षण व्यतिकरेषु च सिद्धमन्त्रा: ।
नीरन्ध्र मोह तिमिर च्छिदुर प्रदीपो
देवि ! त्वदंघ्रि जनितो जयति प्रसाद: ॥ १० ॥

چانی چرنہ کملہ سیوائے ہُند پرساد وش کران لخمی تہ بیہ سدھین
شکھتی سو پراوان موہ روپی گینہ انیہ گٹہ گالان ژانگی سیت زن

देवि ! त्वदंघ्रि नखरत्न भुवो मयूखा:
प्रत्यग्र मौक्तिक रुचो मुदमुद्वहन्ति ।
सेवानति व्यतिकरे सुर सुन्दरीणा -
सीमन्त सीम्नि कुसुम स्तव कायित यै: ॥ ११ ॥

راج یوانی چانی ژرنن ہند نمہ رتن مخنتہ دفتی داران زن کِرن
لوگنئی یلہ پرن پیوان ژہ ژرنن پیٹھ نمہ چمکہ پر زلان مس تہ سُمہ تمن

मूर्ध्नि स्फुरत्तुहिन दीधिति-दीप्ति दीप्तं
मध्ये ललाटमृमरायुध रश्मि चित्रम् ।

हृच्चक्र चुम्बि हुतभुक् कणिकानुरूपं
ज्योति र्यदेत दिदमम्ब! तव स्वरूपम् ॥ १२

मا تا ژہ مستک چینددر زن پرزلوٗن   رام رام بدرنیہ دونی چمکون
ہر دیس منز اگنی جیوتی سروپ زن   ماج چون سروپ چھوی پرکاش آسوٗن

सिन्दूर पांसु पटल च्छुरितामिव द्यां
त्वत्तेजसा जतुरस स्नपिता मिवोर्वीम् ।
यः पश्यति क्षणमपि त्रिपुरे विहाय
व्रीडां मृडानि सुदृशस्तमनु द्रवन्ति ॥ १३ ॥

سندری گردی ستی جرمت آکاش   لاچھ رنگہ پرتھوی شران کرتھ زن
یُس وچھی کھنہ ماترس لاجِ تراوِت   تس سدھی ماج بوانی پتہ دوزن

मातः! मुहूर्तमपि यः स्मरति स्वरूपं
लाक्षारस प्रसरतन्तु निभं भवत्याः ।
ध्यायन्त्यनन्य मनसस्तमनङ्ग तप्ताः
प्रद्युम्न सीम्नि सुभगत्व गुणं तरुण्यः ॥ १४ ॥

ہی ماتا یُس مہورتس دھیان کری   چون سروپ لاچھی رنگہ تارِ سمان
سُندر جوان اچھ ریچھ نہ ڈلونی منہ سبسہ   کامنائی تادِ مچہ تس پیچھی سمُران

आधार मारुत निरोध वशेन येषां
सिन्दूर रञ्जित सरोज गुणानुकारि ।
दीप्तं हृदि स्फुरति देवि! वपुस्त्वदीयं

ध्यायन्ति तानिह समीहित सिद्ध साध्या: ॥ १५॥

مولادارک پران بند کرتھ یمن　　سندری ہیت رنگمُت یمپوشس زن
ہردیس منز اتھ یمپوشس پٹھ　　چون سروپ باسان رات کہو دن
تمنی پُرشن ہنُد چھی دھیان داران　　سدھ سادھ دیوتا تہ بیہ ست جن

ये चिन्तयन्त्यरुण मण्डल मध्यवर्ति
रूपं तवाम्ब! नव यावक पङ्क पिङ्गम् ।
तेषां सदैव कुसुमायुध बाण भिन्न -
वक्ष: स्थला मृगदृशो वशगा भवन्ति ॥ १६॥

سر یہ منڈلکہ پرکاشہ وُوزلی رنگہ سُس بیہ　　لاچھی رنگہ سُس یم چون دھیان داران
کامدیو سندی تیرہ چچہ وچھ سسہ　　اچھ رچھ تمن ماتحت چھی روزان

रूपं तव स्फुरित चन्द्र मरीचि गौर -
मालोकते मनसि वागधिदैवतं य: ।
निस्सीम सूक्ति रचनामृत निर्भरस्य
तस्य प्रसाद मधुरा: प्रसरन्ति वाच: ॥ १७॥

یم پُرش منس منز چندرمہ پاٹھ چمکوُن　　سرسوتی رُوپہ چون دھیان دارن
حدروسس دانی مدرامرت بھر تھُئی　　نیری تمن نرمل پرواہ ہیو زن

शर्वाणि! सर्व जन वन्दित - पादपद्मे!
पद्म च्छद च्छवि विडम्बित नेत्र-लक्ष्मि!

निष्पाप मूर्ति जन मानस राजहंसि!
हंसि त्वमापदमऽनेकविधां जनस्य ॥ १८ ॥

ہی پاپ گالونی ژئ پاد کملن سارۍ جیو چھی پرنام کرانی
ہیوشہ برگہ کے دفتی ہند پاٹھ چانی نتر کمل چھی شوبھانی
شدھ منشس چھک چت ساگرس منز راجہ ہنس ہش زن ژہ روزانی
ژئ چھک سادھکس نانا پرکارک دوکھ تہ وادِ آپدا دور کرانی

इच्छानुरूप मऽनुरूप गुण - प्रकर्ष
सङ्कर्षिणि! त्वमनुसृत्य यदा बिभार्षि ।
जायेत स त्रिभुवनैक गुरु-स्तदानीं
देवः शिवोपि भुवन त्रय सूत्रधारः ॥ १९ ॥

ہی شنکرشنی پننے .یژھلۓ ..ئلی چھکہ ترگن سروپ پانہ داران
تلہ ہی دیوی ترن بونن ہنند کیول گورو شیو ناتھ چھو اپدان
ادہ سوی شمبھو ترن بھونن ہند نمود پاٹھ سوتر دارہ بنان

योयं चकास्ति गगनार्णव रत्नमिन्दु -
योयं सुरासुरगुरुः पुरुषः पुराणः ।
यद्धाम मूर्ध्नि मिद मऽन्धक - सूदनस्य -
देवि! त्वमेव तदिति प्रतिपादयन्ति ॥ २०

آکاشہ سُدرس منز رتنن یوسہ شوبھا ژندرمس چھئ انانی
دیون تہ اسرن یُس گور چھ آسونیہ بھگوانس شکتی دیوانی
یوسہ مہادیوسنز چھ اردانگی سوی چھک ژی ییٔ چھو باج سدھ بنانی

ध्यातासि हैमवति येन हिमांशुरश्मि -
मालाऽमलद्युति-रकल्मष मानसेन ।
तस्याऽविलम्बमऽनवद्यमनल्प कल्प -
मऽल्पैर्दिनैः सृजासि सुन्दरि! वाग्विलासम् ॥ २१॥

یُس سُری چون دھیان نرمل کرِ نوسُس   چندرمس سمان اندرہ شُدھ منہ کن
ہی سندری تس ژہ جھٹپٹ کران پیدہ   سرسوتی ہُند دِکاس انوگرہ کن

त्वां व्यापिनीति सुमना इति कुण्डलीति
त्वां कामिनीति कमलेति कलावतीति ।
त्वां मालिनीति ललिते त्यऽपराजितेति
देवि! स्तुवन्ति बिजयेति जयेत्युमेति ॥ २२॥

سارسُی واتِت ژہ کامنا دایک   لچھمی۔ کلا۔ بیسہ مالا روپ
دشمنس پیٹھ جیٚسُس ژئُ لِلتا   چھی وَنان ژِ جیا ژِی اوما روپ

उद्दाम काम परमार्थ सरोज षण्ड-
चण्ड द्युति द्युतिमुपासित षट् प्रकाराम् ।
मोह द्विपेन्द्र कदनोद्यत बोधसिंह-
लीलागुहां भगवतीं त्रिपुरां नमामि ॥ २३॥

بوُسہ کام راجہ بیجاکھر پمپوشس ڈلہ کے   پھولنہ باپت سرِ بیہ روپ روزانی
مولا دار پیٹھ شٹھ چکرس منز   او پاسی روُپ بوُسہ تنتی آسانی
لوسہ موہ ہستس گالنہ باپت   گیانہ روپ سہہ گفُی چھی روزانی
تمسی بھگوتی ماتا تِرِ پرائ کنُ   گُلِ گنڈتھ تس چھُس پرنام کرانی

गणेश बटुक स्तुता रतिसहाय कामान्विता
स्मरारिवर विष्टरा कुसुमबाण बाणै र्युता ।
अनङ्ग: कुसुमादिभि; परिवृता च सिद्धै स्त्रिभि:
कदम्बवन मध्यगा त्रिपुरसुन्दरी पातु न: ॥२४॥

گنیش تہ بھیرون چھٔے توتا ژہ کرپچ
شوناتھ پانہ چھُوی آسن چوُنہُی
اننگہ کُسمو بیہ ترسیو سدھو چہ و نجیچ
سوی رُدپہ چون مانج ہی ترپور سُندری

رتی سان کامدیو چہ سیوا کرُون
کامدیو پوشہ بانن سوارُون
کدمبہ جنگلس منز چھ روزانی
کلیان ہہ کرتم تہ راچھ میانی

त्वामैन्दवीमिव कला मनु भाल देश -
मुद्भासिताम्बर तला मऽवलोकयन्त: ।
सद्यो भवानि! सुधिय; कवयो भवन्ति
त्वां भावनाहित धियां कुल कामधेनु: ॥ २५॥

یمستنکس منز ژہ چندرمہ کلاہشں
ہی دیوی جلدی چھئی تم بنان دانا
چھک تمن دیوان جیئی سارنی مطلبن

وچھی پچمکاومتی آکاشہ سٔس
بیہ یڈی کوتائی رسس
چانی بامنلے کن تم نرمل بوزشس

उत्तप्त हेम रुचिरे त्रिपुरे! पुनीहि
चेत श्चिरन्तन मऽघौघ वनं लुनीहि ।
कारागृहे निगड़ बन्धन पीड़ितस्य
त्वत्संस्मृतौ झड़िति मे निगड़ा स्त्रुटयन्ति ॥ २६

تاومت سون زن ژہ چمکان ترپرائی
شُدھ کرمن مہ پاپہ کھلہ میانی لون

سمسار روپی جیلس منتر چھوس بہ   کامنائی بیڑین ہُند چھوم مہِ بور
چانی سمرنی کن جلد جلد چھنَن مہِ بیڑی   یلہ آسی عارتس مہِ انوگرہ چون

रुद्राणि! विद्रुम मयीं प्रतिमा मिव त्वां
ये चिन्तयन्त्यरुणकान्ति मनन्य रूपाम्।
तानेत्य पक्ष्मल दृशः प्रसभं भजन्ते
कण्ठावसक्त मृदु बाहु लता स्तरुण्यः ॥२७॥

ہی روودرانی لُس چانِس سُروپس وچھی   روودر شکلہ سر پسندی پاٹھ چیکان
اپُور و روپس ہتھسئ دھیان کری   سُندر نظر وسیہ اچھ ریچھ جوان
زورہ سیت تمہ گردنی بیٹھ اتھ تراوی ترآوی   انداندی روزتھ تس سیوا کران

त्वद्रूप मुल्लसित दाडिम पुष्परक्त -
मुद्भावयेन्मदन दैवत मक्षरं यः।
तं रूपहीनमपि मन्मथ निर्विशेष -
मालोकयन्त्युरु नितम्बभरा स्तरुण्यः ॥२८॥

لُس چون دھیان کری دین پوشہ زنگہ گُس   اوناشہ کامراج ہیجہ اکھر س
یُدوئی روپ کن آسی سوی بد شکل   اچھ ریچھ وچھن زن کامدیو تس

त्वद्रूपैक निरूपण प्रणयिता बन्धो दृशो स्त्वद्गुण -
ग्रामाकर्णन रागिता श्रवणयो स्त्वत्संस्मृति श्चेतसि।
त्वत्पादार्चन चातुरी करयुगे त्वत्कीर्तनं वाचि मे
कुत्रापि त्वदुपासन व्यसनिता मे देवि मा शाम्यतु ॥२९॥

ہی دیوی چانہ درشنک ابلاشس   ہر دمہ نترنی منتر مہ روزتن

چانی گُن یوزنک تمنا مہ آستن — ہر دمہ روزتن میانن کنن
یون نامہ سمرن ژتس منز گری گری — چانی یاد پوجا میانن اتھن
یون کیرتن کردنی روزتن مہ وائی — اوپاسنا چانی کم مَتہ مرِہ گژھتن

ब्रह्मेन्द्र रुद्र हरि चन्द्र सहस्र रश्मि -
स्कन्द द्विपानन हुताशन वन्दितायै ।
वागीश्वरि! त्रिभुवनेश्वरि! विश्वमात -
रन्त र्बहिश्च कृत संस्थितये नमस्ते ॥३०॥

سرسوتی ترپور سندری جگت مانا — بھونی شوری چھک آسوینہ ژِئی
برہما رودر اندر سریہ چندرمہ کمار — وشنو گنیش چھوئی پوجان ژِئی
اندرہ نبرہ واتت ژہ ترِبھونس سارسئی — گُل گنڈِت میون پرنام واتی نئے ژئی

यः स्तोत्र मेतदनु वासर मीश्वरायाः
श्रेयस्करं पठति वा यदि वा शृणोति ।
तस्येप्सितं फलति राजभि रीड्यते, सो
जायेत स प्रियतमो हरिणेक्षणानाम् ॥ ३१ ॥

یُس ئی چون تو ترپری پرتھ دوہہ سالولن — یا کنو بوزی اَدہ بنیہ تس کلیان
چکرورت راجہ لتس کرن پوجا — ساری مطلب لتس چھی نیران
منیچ کامنا سدھ تس چھی سیدان — سُوی چھُو یوگنین ہند زیادہ ٹوٹھ بنان

अथ घटस्तवः ॥

ॐ नमो महामायायै

देवि! त्र्यम्बक पत्नि पार्वति सति त्रैलोक्य मातः शिवे!
शर्वाणि त्रिपुरे मृडानि वरदे रुद्राणि कात्यायनि!
भीमे भैरवि चण्डि शर्वरि कले कालक्षये शूलिनि!
त्वत्पाद प्रणतान् अनन्य मनसः पर्याकुलान्पाहि नः ॥१॥

ہی دیوی چھک ژہ ترمبکہ پتنی
ژی وناں ستی ژی پاروتی
تریلوکی ہنز ماتا بھگوتی
ژی ور دیوان ژی چھک مرڈانی
ژی ترپور سندری ژی رود رانی
ژی بھیانک روپ ژی شروری
ژی چینڈی ژی ترشول دارانی
ژی کلی کالس ناش کرانی
آئے شرن ژہ پادن وننے کن چھی منتھی
ربا کلتاے منزا سہ رچھ ژی

उन्मत्ता इव सग्रहा इव विषव्यासक्त मूर्च्छा इव,
प्राप्त प्रौढ़मदा इवार्तिविरहग्रस्ता इवार्ता इव ।
ये ध्यायन्ति हि शैलराज तनयां धन्यास्त एकाग्रत-
स्त्यक्तोपाधि विवृद्ध राग मनसो ध्यायन्ति वामभ्रुवः ॥२॥

مجراہ تم پراہ بس زہر کن ہور چھت نشہ رس
درہن چھٹمت چانی عار چرہ بس
ہی ہمالہ پتری یم کرن چون دھیان
تم آسونی چھی ستھاہ بھاگوان
اچھ رچھ ایکاگر بنتھ اوپادھی رچھ
راگہ سستہ سندوی دھیان چھی داران

देवि! त्वां सकृदेव यः प्रणमति क्षोणीभृत स्तं नम-
न्त्याजन्म स्फुरदङ्घ्रि पीठ विलुठत्कोटीर कोठि च्छटाः
यस्त्वामर्चेति सोर्च्यते सुरगणैः यः स्तौति स स्तूयते
यस्त्वां ध्यायति तं स्मरार्ति विधुरा ध्यायन्ति सिद्धाङ्गनाः

یُس پرِش اکہ لٹہ کری زہ کُن پرنام
تسنزی کھراوی ژھواژہ ہوکھٹہ ڈلوان
یُس پرِش لولہ کن کری چانی پوجا
تس پرِشس پوژان دیوہ کھل
یُس پرِش کران آسی چانی توتا
دیوتا تسنزی استوتی کران
یُس پرِش من کن کری چونی دھیان
سُر گچھ اچھ ریچھ تس چھی سمران

ध्यायन्ति ये क्षणमपि त्रिपुरे! हृदि त्वां
लावण्य यौवन धनैरपि विप्रयुक्ताः ।
ते विस्फुरन्ति ललितायत लोचनानां
चित्तैक भित्ति लिखित प्रतिमाः पुमांसः ॥ ४ ॥

ہی ترپور سندری یس کری دھیان چون
منز منس اکسی کھنہ ماترس
یُدوے شو آسہ سُندر تاآئی روس
بیہ جوانی روس بیہ نردھن
اشتہ بدھی تس منچے لیہ بیٹھ
شکلہ کھنن سوی دھیان سرون

एतं किं नु दृशा पिबाम्युत विशाम्यस्याङ्ग मङ्गैर्निजैः
किं वाऽमुं निगलाम्यनेन सहसा किं वैकतामाश्रये ।
तस्येत्थं विवशो विकल्प घटना कृतेन योषिज्जनः
किं तद्यन्न करोति देवि! हृदये यस्य त्वमावर्तसे ॥

اِتھس پور شس کرہا پرِیش نظری بیت
اچھہا اسندن استخان

کیاسنا نگلتھ گژہ نا مِس سیت   کونی کِن پانس سیت رٔٹھن
اچھ رچھ سندرگری گری لتس کُن   بے رُوک پاٹھ آدین سپدن
سنارس منز کیا چھو دُرلبھ تس   ہر دیس منز یس ژہ پانہ فیرن

विश्वव्यापिनि! यद्वदीश्वर इति स्थाणावनन्याश्रयः
शब्दः शक्तिरिति त्रिलोकजननि! त्वय्येव तथ्यस्थितिः।
इत्थं सत्यपि शक्नुवन्ति यदिमाः क्षुद्रा रुजो बाधितुं
त्वद्भक्तानपि न क्षिणोषि च रुषा तद्देवि चित्रं महत् ॥

ہی جگت دیابنی یتھ شیو ناؤس   ایشرہ ناو جگتس منز فنان
تتھے پاٹھ ماج بھوانی ژی جگتس منز   شکتی ہند ناو چھوی ژہ شویان
یدوے ایشر بھکتن سمسارس منز   کونی کونی دوکھ چھو دیوان
آسِتھ چھہ ماج چون کرودھس یتھ تی   چھکنہ بنن بھکتن دوکھ ژہ ہاوان

इन्दोर्मध्यगतां मृगाङ्कसदृशच्छायां मनोहारिणीं
पाण्डूत्फुल्लसरोरुहासनगतां स्निग्धप्रदीपच्छविम्।
वर्षन्तीममृतं भवानि! भवतीं ध्यायन्ति ये देहिन-
स्ते निर्मुक्तरुजो भवन्ति विपदः प्रोज्झन्ति तान्दूरतः।

چندرمس منش صفا چندرمہ گہ گشس   پھولتس پمپوشس پٹھ ژُی
خوش الونہ پرکاشہ گہ گشس ژہ آسوینہ   لوُسہ کران ورشن امرت کوی
یم یُی دھیان کرن تم بیماری روس روزان   آپدا چھی تمنی دور سپدان

पूर्णेन्दोः शकलैरिवातिबहुलैः पीयूषपूरैरिव
क्षीराब्धेः लहरीभरैरिव सुधापङ्कस्य पिण्डैरिव।

प्रालेये रवि निर्मितं तव वपु ध्यायन्ति ये श्रद्धया
चितान्त र्निहितार्ति ताप विपद स्ते सपदं बिभ्रति ॥८॥

پونم چندرمہ زن امرت پراواہ زن   گچھ پنڈہ کھیرہ سُدرِچ لہر زن
شینس ہیو صفا چون سروپ بناوت   یُس کری دھیان تتہ منہ لوکہ کن
تس چھی دُور گژھان دوکھ عار چرتہ آپدا   سمپدا سو پراوان جنمہ جنمن

ये संस्मरन्ति तरलां सहसोल्लसन्तीं
त्वां ग्रंथि पञ्चक भिदं तरुणार्क शोणाम् ।
रागार्णवे बहुल रागिणि मज्जयन्तीं
कृत्स्नं जगद् दधति चेतसि तान्मृगाक्ष्यः ॥९॥

یُس سادھک کری دھیان چون باسُون   چمل پرکاشہ سُس بجلی سمان
پانژھ دل ژھی بالہ سربہ سندی پاٹھ   اُوزلہ رنگہ سُستی ژن ژہ چمکان
رنگہ سُد رس منز فُٹمت ساروئی   جگت زن رنگہ کن سُرخی سان
یُس ئی دھیان کری تس یوگنئی چھس منز   تسندوی گری گری دھیان چھی دھاران

लाक्षारस स्नपित पङ्कज तन्तु तन्वी-
मन्तः स्मरत्यनु दिनं भवतीं भवानि ।
यस्तं स्मर प्रतिमम्ऽ प्रतिम स्वरूपा
नेत्रोत्पलै मृगदृशो भृशमऽर्चयन्ति ॥१०॥

لاچھی سیت رنگمتہ پمپوشہ تارھیو   پرتھ دوہہ یُس داری چونئی دھیان
تس کامہ دیو زانت کمہ یوگنئی   نتر رُوپہ پوشو چھی پوجا کران

स्तुमस्त्वां वाच्यमुव्यक्तां हिम कुन्देन्दु रोचिषम्
कदम्ब माला बिभ्राणा माऽऽ पाद तल लम्बिनीम् ॥ ११ ॥

توناکران چھی اسی ژہ ہی واکھ دیوی   چندرمس کوندہ پوشس ہش یوسہ چھی دِفتمان
شوبھونی کدمبہ پھولک مالہ ژہ دارونی   تال چھئے ژہ شیرہ پیٹھ پادن تانِ

मूर्ध्नीन्दोः सितपङ्कजासनगतां प्रालेयपांडु त्विषं
बर्षन्ती ममृतं सरोरुह भुवो वक्त्रेपि रन्ध्रेपि च।
अच्छिन्ना च मनोहरा च ललिता चाऽति प्रसन्नापि च
त्वामेव स्मरतां स्मरारिदयिते! वाक्सर्वतो वल्गति॥

کلس پیٹھ چندرمہ شوبون ژہ درامت   پمپوشس پیٹھ ژہ دفتی سبس
ہتھ چھک ژہ شوبونی برہمہ ندرس منز   امرت چھٹان بڈی شوبھالے سبس
یُس بیٔ دھیان کری چون ہی دیوی تس   سرسوتی نیرہ مکھ بڈی وکاسہ سبس

ददातीष्टान्भोगान् क्षपयति रिपून् हन्ति विपदो-
दहत्याधीन् व्याधीन् शमयति सुखानि प्रतनुते।
हठाद्दऽन्तर् दुःखं दलयति पिनष्टीष्ट - विरहं
सकृद् ध्याता देवी किमिव निरवद्यं न कुरुते ॥१३॥

مطلب چھک دِوان دشمنن ژہ گالان   آپداین چھک ژہ ناشس کران
آدین جالان ویادین شمراوان   سکھ نہ سمپدا چھک ژہ ولستاران
اندرم دوکھ نہ داد پریہ ودھ چھ گالان   یم اکی لٹی ماجی دھیان چون کران
تِم ادہ کمہ نہ پاپہ نشہ چھی موکلان

यस्त्वां ध्यायति वेत्ति विन्दति जपत्यालोकते चिन्तय-

त्यन्त्वेति प्रतिपद्यते कलयति स्तोत्याश्रयत्यर्चेति ।
यश्च त्र्यम्बकवल्लभे तव गुणानाकर्णयत्यादरा -
त्तस्य श्रीर्न गृहादपैति विजयस्तस्याग्रतो धावति ॥१४॥

یُس چون کری سُمرن یُوزسیت لسن زانی — دیایکے کن ماجی یُس ژہ پرادی
شُدھ مَنہ کن جیہ ناو چون گری گری — لولہ نتر وسیت کری درشُن
شروتہ کن منن کن یُس وِچاری — ہر وقتہ تو تاہی کری چانی بیہ یُو جا
گُن گیوی چانی لولہ سان دن تہ رات — تمہ روستوی یُس نہ روزی اکھ ساعت
لچھمی چھینہ لتسندی گھری نشہ نیران — جئے لُس پرتھ وقتہ برونٹھ چھو دوران

किं किं दुःखं दनुजदलिनि! क्षीयते न स्मृतायां
का का कीर्तिः कुलकमलिनि! ख्याप्यते न स्तुतायाम् ।
का का सिद्धिः सुरवरनुते! प्राप्यते नार्चितायां
कं कं योगं त्वयि न चिनुते चित्तमालम्बितायाम् ॥१५

کمسنا دوکھ چھی تم ہی راکھسن گالونی — یم گلنی نہ چانے سمرنی سیت
کوسہ چھی نیکنامی ہی گُلس کھارونی — یوسہ نہ بنی چانے تو تایے سیت
کوسہ کوسہ چھی سدھی ہی سدھی داتری — یوسہ نہ پراوت سپدی چانی پوجائے سیت
کم کم چھی تم لوگ ہی جگت امبا — یم نہ سدھ بنن چانی جپتن سیت

ये देवि! दुर्धरकृतान्तमुखान्तरस्थाः
ये कालि! कालघनपाशनितान्तबद्धाः ।
ये चण्डि! चण्डगुरुकल्मषसिन्धुमग्ना -
स्तान्पासि मोचयसि तारयसि स्मृतैव ॥१६॥

ہی دیوی یم مہاکالہ سندسی کٹھنس   موکھس منز باگ گیمت
ہی کالی یم مہاکالہ سنتری موچی   زری چہ پاٹھ چھی گنڈنہ آمرت
ہی چنڈی یم باریک تہ کٹھنس   پایہ کس سمندرس منز چھ قسمت
یلہ کرن دھیان چون تلہ چھک رچھان   تمن موکلاوان بیہ تاران چھئی

लक्ष्मी वशीकरण चूर्ण सहोदराणि
त्वत्पाद पङ्कज रजांसि चिरं जयन्ति।
यानि प्रणाम मिलितानि नृणां ललाटे
लुम्पन्ति देव लिखितानि दुरक्षराणि ॥ १७ ॥

موج بوانی لچھمی وشں کرنس پٹھ   پادچہ گردہ چانی چھی طاقتہ سپس
چانی پرنامہ وزی لگہ یمن للاٹس   پادچہ گردہ چانی بڈی نشانہ سپس
سوئی پادچ گردہ گالی دراکھرتس   جگتس منز بنی سویچے کار سپس

रे मूढा: किमयं वृथैव तपसा काय: परि क्लिश्यते
यज्ञै र्वा बहुदक्षिणै: किमितरे रिक्ती क्रियन्ते गृहा:।
भक्तिश्चेदविनाशिनी भगवती पादद्वयी सेव्यता-
मुन्निद्राम्बुरुहातपत्र सुभगा लक्ष्मी पुरो धावति ॥ १८ ॥

ہی موڑھ کیازی چھک لے فائدہ تپ کرن   پننس شریرس تکلیف دیوان
یگنہ کن دان کن برٹی دکھنا ی رکن   کیازہ چھک گرہ پننُ خالی کران
گژھہ شرن ماجہ شارکائی پراوچہ بھکتی   ہہ کرون تسندوی پاد سیون
ادہ پھولتہ پمپوشہ نترو سپس   لچھمی چہ بروٹھ بروٹھ چھئی دورن

याचे न कंचन न कंचन वञ्चयामि
सेवे न कंचन निरस्तसमस्त दैन्य: ।
श्लक्ष्णं वसे मधुर मृद्धि भजे वरस्त्री
देवि! हृदि स्फुरति मे कुलकामधेनु: ॥१९॥

کانسی منگہ نہ بیہ کینسی تارہ نہ بازی   عاربجہ ترِاوہ کرِنہ کینسی سیوا
زاول وسترِ دارہ کھیمہ مُودری چیز   اچھ رچھہ نسی سیت کرہ کھیلا
یلہ ماج بوانی ہردیس منز مہ روزک   تلہ میانی کامنائے سِدھ سپدن

शब्दब्रह्ममयि! स्वच्छे! देवि! त्रिपुर सुन्दरि! ।
यथाशक्ति जपं पूजां गृहाण परमेश्वरि! ॥२०

ہی شبدروپی نرمل سروپی   ہی دیوی ہی ترپور سُندری
کریتھا شکھتی مہ چانی پوجا   کر سُویکار ہی پرمیشوری

नन्दन्तु साधका: सर्वे विनश्यन्तु विदूषका:
अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरु: सदा ॥ २१

روزتن سُکھی ماج سادھک ساری   یم دوشٹھ آسن تِم گلتن
شوروپ اوستھا ہتہ ماج بنتن   گورہ دیو سدا مہ پٹھ پرسن روزتن

दर्शनात्पापशमनी जयान्मृत्यु विनाशिनी ।
पूजिता दु:ख दौर्भाग्यहरा त्रिपुरसुन्दरी ॥२२॥

چانی درشنہ پاپ ساری چھی گلان   چانی جپہ مرتو چھو ناش سپدان
پُوجاے کن چون مہما گیونہ کن   چھوس دوکھ دُربا گیہ دور چھیس گژھان

नमामि यामिनीनाथ लेखालङ्कृत-कुन्तलाम् ।
भवानीं भवसन्ताप निर्वापण-सुधा-नदीम् ॥२३॥

نمسکار چھوس کران یمیس کیشس منز چھ   چندرمہ پرزلان راتر و دن
سمسارٕ دُکھن چھک نِواران ژٕ ئی   امرت ندی ھندی پرواہ سیت زلن

मंत्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्गतम् ।
त्वया तत्क्षम्यतां देवि! कृपया परमेश्वरि ॥२४॥

منتر ھین آسِت کریا ھین آسِت   ودھی ھین آسِت ئی کینژاہ پرٕ دوٗم
تتھ سارسٕئی ہی پرمیشوری   ژٕ ئی کرپایے کن عارتس مہ تاج بخشم

:o:

अथ अम्बस्तव : ॥

ॐ नमो जगदम्बिकायै ।

यामाऽमनन्ति मुनयः प्रकृतिं पुराणीं
विद्येति यांश्रुतिरहस्यविदो वदन्ति ।
तामर्ध पल्लवितशंकर-रूप - मुद्रां
देवीमऽनन्य शरणः शरणं प्रपद्ये ॥ १॥

یس مُنیشر آدِ پرکرتی مانان   یس وِنان ودیا ویدرھسہ زانہ وِنی
تس شیو ناتھ سنز اردانگی یوُسہ   شو بھائی سُس جگتس چھ رچھوِنی
تس آمُرت بہ ایکاگر چِت بنِت   چھوس پیوان تس پادن پیٹھ پرن

अम्ब! स्तवेषु तव तावद्ऽकर्तृकाणि -
कुण्ठी भवन्ति वचसामऽपि गुम्फनानि ।
डिम्भस्य मे स्तुतिरऽसावऽसमञ्जसापि -
वात्सल्य निघ्न हृदयां भवतीं धिनोति ॥२॥

ہی ماتا چانی توتا کرنس پیٹھ   برہما واتی تی جڈھ بنانی
مہ شُر سنزی توتا بدھی ٹوٹ پھوٹئی   باوناے کِن ہردیس ژہ سُکھ دیوانی

व्योमेति बिन्दुरिति नाद इतीन्दुलेखा
रूपेति वाग्भव तनूरिति मातृकेति ।

निष्यन्दमान सुख बोध सुधा स्वरूपा।
विद्योतसे मनसि भाग्यवतां जनानाम् ॥३॥

چداکاشہ روپ کِن نادبندروپہ کن   چندرمہ کلاہشں چھک ژہ یمہ زلان
وانی ہُندشبد روپ چون چھوآسوُن   شُکھ تہ گیان امرت ژہ نشہ نیران
چمکان چھک تس منز ملنس ژہ پلنئے   جگتس منز آسہ یوس بہا گِوان

आविर्भवत्पुलक संततिभिः शरीरै-
र्निष्यन्दमान सलिलै र्नयनैश्च नित्यम् ।
वाग्भिश्च गद्गद-पदाभि रुपासते ये
पादौ तवाम्ब! भुवनेषु त एव धन्याः ॥४॥

آسن یس روم اوتھ دینہ شریرس   اوشہ آسس نترو نیران
وانی کن پد پری گت گچھ گچھ   یادن ژہ آسہ یُس پوجا کران
تس ہیوکوس سنا چھو تریلوکی منز   ترن بونن منز سوی چھو بہا گوان

वक्त्रं यदुद्यतमभिष्टुतये भवत्या-
स्तुभ्यं नमो यदपि देवि! शिरः करोति ।
चेतश्च यत्त्वयि परायणमम्ब! तानि
कस्यापि कैरपि भवन्ति तपो विशेषैः ॥५॥

مُکھ یس آسی اودلوگہ ستُس   ہی ماج چانی توتا کرنس پیٹھ
شیر پسند دی آسہ گری گری ہی موج   ژیٔ کُن نمسکار کرنس پیٹھ
مَن یس لگمت آسہ موج ژیٔ کُن   سمرن کری یُون راتر و دلن
آسی کانہہ سُو بہاگوان کمتا نیہ خاص تپ کے   پُونیہ کن روزی گری گری چھی ثرن

मूलालवाल कुहरादुदिता भवानि!
निर्भिद्य षट् सरसिजानि तडिल्लतेव ।
भूयोऽपि तत्र विशसि ध्रुवमण्डलेन्दु -
निःष्यन्दमान परमाऽमृत तोय रूपा ॥ ६॥

مولادارٕ نشہ دراںج تھرشہ پمپوشس چیٹتھ بجلی ہندی پاٹھی ھیُرکُن کھسان
سہسر ڈلسی منز اٹرت تورہ نیران امرت وانی روُپہ بُن پچھی وتان

दग्धं यदा मदनमेकमऽनेकधा ते
मुग्धः कटाक्ष विधिरङ्कुरयां चकार ।
धत्ते तदा प्रभृति देवि! ललाट नेत्रं
सत्यं ह्रियेव मुकुलीकृत मिन्दुमौलिः ॥७॥

یلہ زوُل کامدیو اکھ شیو ناتھن اکہ کٹاکھی تیتھ کیت اُوپداوتھ
تنہ پیٹھ مہادیو منز للاٹک نتر شرم کرِن اوڈوُئی نتر چھوُموُژراوتھ

अज्ञात संभवऽमनाकलिताऽन्ववायं
भिक्षुं कपालिनमऽवास समऽद्वितीयम् ।
पूर्वं करग्रहण मङ्गलतो भवत्याः
शम्भुं क एव बुबुधे गिरिराजकन्ये! ॥ ८॥

نہ جانمتی جنم سُس کولہ سُس بھکیو ننگئے تہ دوئیمُی روس ژھنت کلہ مال
چانی دواہ برونٹھ ہی ہمالہ پُتری کُس اوس زانان شیوُ سُند حال

चर्माम्बरं च शवभस्म विलेपनं च
भिक्षाटनं च नटनं च परेत भूमौ ।
वेताल संहति-परिग्रहता च शम्भोः
शोभां बिभर्ति गिरिजे! तव साहचर्यात् ॥९॥

چرم پوشاک شمشان بھسما ملت   نژان شمشانن سُوبھیک منگہ وُن
بھوتہ کھل پروار آسُون تس شیوس   شوبان تلہ یلہ ژِہ سیت چھُو یکوُن

कल्पोप संहरण केलिषु पण्डितानि
चण्डानि खण्डपरशोरपि ताण्डवानि ।
आलोकनेन तव कोमलितानि मातः!
लास्यात्मना परिणमन्ति जगद्विभूत्यै ॥ १०॥

کلپانتک ناش نچُو ناتہ گنِدُو نا   تس ہادیو سنز چھی بڈ کریڈا
ساردی سو بدلان سمپداین منز   ییلہِ تراوان تتھ ژہ شوُبھ نظرا

जन्तोरपश्चिमतनोः सति कर्मसाम्ये
निःशेष पाश पटल च्छिदुरा निमेषात् ।
कल्याणि! देशिक कटाक्ष समाश्रयेण
कारुण्यतो भवसि शाम्भव वेद दीक्षा ॥ ११॥

جیوس کرمن سیدتھ شدھی   اگہ نمیشہ پھانسی سموتس ژہ گالان
ژٔی چھک دیای کِن گورہ روپ بنِتھ   شِوشکھتی دیکھیا اُپدیش ژٔی کران

मुक्ता विभूषणवती नव विद्रुमाभा -

यच्चेतसि स्फुरसि तारकितेव सन्ध्या ।
एकः स एव भुवन त्रय सुन्दरीणां
कन्दर्पतां व्रजति पञ्चशरीं विनापि ॥ २२

تہ مالہ زیور رُودرہ مالہ چھُن چھُن   آسوتیہ چھک ژہ موج شوبھا یمان
ن پوٗرشس آسہِ سندھیا تارکوسس   چون سروپ یتھ ھیونت باسان
ن پورشس تری بھونچہ یوگنئ   پانچہ کان زوس تی کامدیو سمران

ये भावयन्त्यमृतवाहिभि रंशुजालै -
राप्यायमान भुवनाममृतेश्वरी त्वाम् ।
ते लङ्घयन्ति ननु मातर लङ्घनीयां
ब्रह्मादिभिः सुर वैरैरपि कालकक्षाम् ॥ २

ماتا یم ژہ سُرونی آسن   امرتہ رویہ سُکھ دیوان ترن بھونن
تران کالہ مریا دبا سئے اپُور   یتھ ترُن کھُٹھن برہما دکن تہ دیون

यः स्फटिकाक्ष गुण पुस्तक कुण्डिकाढ्यां
व्याख्या समुद्यत करां शरदिन्दु शुभ्राम् ।
पद्मासनां च हृदये भवती-मुपास्ते
मातः! स विश्व कविताकिक चक्रवर्ती ॥

ٹکچ جپ مال اکہ اتھ دار تھ ژہ   پوُستک کمنڈل بیہ دون اتھن
کھیانس پیٹھ بیاکھ اتھ چھ لگُرت   چندرمس ھیو ہیوشس زن چھ آسن
یتھ دھیان کری چون موج منز منس   کوین ھند چکرورت بنان سو جگتس

बर्हावतंसयुत बर्बर केशपाशां
गुञ्जावली कृतघनस्तन हार शोभाम् ।
श्यामां प्रबाल वदना सुकुमार हस्तां
त्वामेव नौमि शबरीं शबरस्य जायाम् ॥ २५॥

مورنچہ مکٹہ سُٹس ژہ چمکونی کیشہ سُٹس   رژہ فلی ہار سُٹس ژہ شوبھا یُمان
چمکونی مکھہ سُٹس تہ کومل اتھو سُٹس ژہ   تتھ شکار بائی روپس بہ پرنام کران

अर्धेन किं नवलता ललितेन मुग्धे !
क्रीतं विभोः परुष ऽर्धमिदं त्वयेति ।
आलीजनस्य परिहास वचांसि मन्ये
मन्द स्मितेन तव देवि जडी भवन्ति ॥ २६॥

ہی مہا سُندری چھک ژُی آسونیہ   منوہر تہ سُندر نرم تہ جن
کیا زی ہیتھن مولہ پتھ ھیو سوامی   لیس سخت بیہ کٹھور شیو چھو آسون
دیسن ہنہ۔ اتھ ہاسی پوروک وچن   چانی کم اسنہ سیت موڑھ چھی تم بنن

ब्रह्माण्ड बुद्बुद कदम्बक संकुलोऽयं
मायोदधि - विविध दुःख तरङ्ग मालः ।
आश्चर्य मम्ब झटिति प्रलयं प्रयाति
त्वद् ध्यान संतति - महा वड़वा मुखाग्नौ ॥ २७॥

برہمانڈ بُبز کھل بھرت ئی مایا سُدرہ   دُکھ لہرو سیت برتھ آسُون
آشچرچھو ہی موج ناشس چھو واتان   چون دھیان اتھ کہوت چھو واڑوا اگن

दाक्षायणीति कुटिलेति गुहारणीति -

कात्यायनीति कमलेति कलावतीति ।
एका सती भगवती परमार्थतोऽपि
संदृश्यसे बहुविधा ननु नर्तकीव ॥१८॥

دکھ پتری ژئی مولا دار داسنی
یا یتی یینئ ژئی لمحی ژئی بیر
چھک کونئی آسِت ہی موج بھوانی
ہرتھ گفای منز چھک ژہ روزانی
چھکر کاوتی تہ ژری بھگوتی
لبنہ چھک ایوان بہہ روپہ پنانی

आनन्द लक्षणमनाहत नाम्नि देशे
नादात्मना परिणतं तव रूपमीशे ।
प्रत्यङ्मुखेन मनसा परिचीयमानं
शंसन्ति नेत्रसलिलैः पुलकैश्च धन्याः ॥१९॥

آنند رُوپی ہرتھ چکرس منز
ابھیاسہ کن انتر مکھ منہ کن
ناد روپہ بنی لیس پزنئی دھیان
اشہ سُس کری دھیان سہ بھاگوان

त्वं चन्द्रिका शशिनि तिग्मरुचौ रुचिस्त्वं
त्वं चेतनासि पुरुषे पवने बलं त्वम् ।
त्वं स्वादुतासि सलिले शिखिनि त्वमूष्मा
निःसारमेव निखिलं त्वदृते यदि स्यात् ॥२

ژئی چھک موج بانی چندس روشنی
ژئی چھک چیتن پورشس آسمان
ژئی سواد پانس اگنس شکتی
ژئی برس دتی آسان
ژئی پنہ ان پانس بل ہا سان
ژئی روس جگت لشہ سار چھو روزان

ज्योतींषि यद्दिवि चरन्ति यदन्तरिक्षं

सूते पयांसि यदुहि धरणीं च धत्ते ।
यद्भाति वायु रनलो यदुदर्चिराऽस्ते
तत्सर्व मम्ब! तव केवलऽऽमाज्ञयैव ॥२१॥

ہی ماتا ہریہ چندرمہ تارک   آکاشس پیٹھ یم پرکاشس دیوان
شیشہ ناگ لیس گل پرتھوی داران   مینگ یم رُود جگتس تراوان
وایو فیران اگن چھو زوتان   تم سارِکی چانی حکمہ سیت چلان

सङ्कोच मिच्छसि यदा गिरिजे तदानीं
वाक् तर्कयो स्त्वमऽसि भूमिऽरनाम रूपा ।
यद्वा विकास मुपयाति यदा तदानीं
त्वन्नाम रूप गणनाः सुकरी भवन्ति ॥ २२॥

سنکوچہ یژھا یلہ چھئے ژہ سیدان   تلہ ژہ موج من تہ بُدھ نردکار بنان
یلہ وِکاسس ایوان چھک ژہ ہی گرجی   تلہ چانی نام رُوپ نن چھہ نیران

भोगाय देवि भवतीं कृतिनः प्रणम्य
भ्रू किंकरी कृत सरोज गृहाः सहस्राः ।
चिन्तामणि-प्रचय कल्पित-केलि शैले
कल्पद्रुमो पवन एव चिरं रमन्ते ॥२३॥

ہی دیوی سُکھ باپت بہاگوان   یلہ ژُئی چھئی تم پرنام کران
تلہ چانی بمبہ حرکچ ہِتن ہالچھی تہ   سامہ بُزہ ایشورای چھی روزان
چنتامنی رتنک سموہ بناونتس   کھیلی ہندس پہاڑس پیٹھ تم کھیلان
کلپہ ورکھ سستیو برمتن باغن   منز تم پچکال چھئی فرانی

हन्तु त्वमेव भवसि त्वदधीन मीशे !
संसार तापऽमखिलं दयया पशूनाम् ।

वैकर्तनी किरण संहतिरेव शक्ता
धर्मं निजं शमयितुं निजयैव वृष्ट्या ॥२४॥

ہی ماج جوس سمسار دُوکھ ساری
دوکھن ہُند ناش ژہ ماتھن چھو آسوُن
یتھ پاٹھ سِرریہ چھوی پننی گرمی
چھہس ژہ ئی ناش کران دیمایے رکن
دوکھ نورتی چھُی ژہئی آدین
شُمر اوان پننی ورشنہ رکن

शक्तिः शरीरमधिदैवत मन्तरात्मा
ज्ञान क्रिया करण मानस जाल मिच्छा ।
ऐश्वर्य मायतनमावरणानि च त्वं
किं तन्न यद्भवसि देवि ! शशाङ्कमौलि ! ॥२५॥

شریر چہ آسونی شکھتی ژہ آسونی
جیوآتما دھیان شکھتی کریا شکھتی
یشرھا شکھتی الشوری پرپوار ژہئی
کیانہ چھک ژہ آسوینہ لیُس سروپ نشو سنہ
وراٹ سُروپ چھک آسوتی ژہئی
اندریہ شکھتی آسنہ شکھتی ژہئی
گرھدین ہنز جاے آسونی ژہئی
سوی سروپ چھک پری پوُرن ژہئی

भूमौ निवृत्ति रुदिता पयसि प्रतिष्ठा
विद्यानले मरुति शान्तिरतीव शान्ता ।
व्योम्नीति याः किल कलाः कलयन्ति विश्वं
तासां विदूरतर मम्ब ! पदं त्वदीयम् ॥२६॥

پرتھوی منز نورتی کلا رُوپ ژہئی
اگنس منز ودیا کلا ژہ آسونیہ
آکاشس یمہ کلاے جگتس داران
تمو کلایو نشہ دور چھن سروپ
جلس منز پرتھشٹا کلا رُوپ ژہئی
پونس منز شانتی کلا ژہئی
تمو نشہ دور چھن سروپ آسوُن
تمہ نشہ موج دور روزان ژہئی

यावत्पदं पदसरोजयुगं त्वदीयं
नाङ्गी करोति हृदयेषु जगच्छरण्ये ।
तावत् विकल्प जटिलाः कुटिल प्रकारा-
स्तर्कग्रहाः समयिनां प्रलयं न यान्ति ॥२७॥

یُت تام نہ پاد جُوری چانی رُٹن ہردیس
یم بحث کرونی اُلٹہ وادی
ہی جگت رچھونی تتُ تانیہ تم شک برتھیُ
موڑھ بہاوُ تہندُ ناش کتی سپدی

यद् देवयान पितृयान विहार मेके
कृत्वा मनः करण मंडल सार्वभौमम् ।
याने निवेश्य तव कारण पञ्चकस्य
पर्वाणि पार्वति! नयन्ति निजासनत्वम् ॥२८॥

یم یوگی پُرش پرانا یانہ یوگ ابھیاس کرِ کرِ یلہ پرا دِ
اندر یہ کھیل تہ من آسِک شوزینمُت تم سواری کران یانٔن کارِ

स्थूलासु मूर्तिषु महीप्रमुखासु मूर्तेः
कस्याश्चनापि तव वैभव मम्ब! यस्याः ।
पत्या गिरामपि न शक्यत एव वक्तुं
तासि स्तुता किल मयेति तितिक्षितव्यम् ॥२६॥

پرتھوی تہ پیٹھ بایا تُتس تام یمہ تھولہ مورتئی موج چھی آسا
کونی مورتی منز ہی موج بوانی چانی ہشش وبھوتی چھنہ باسا
برہما دکن تی چھونہ تتھ ہیو سامرتھ گنُ چانی گیوتھ چھنہ تم تی کینہ
تمیُ وبھوتی ہندُ گُن کرمہ گاین معافی دیتم مہ چھوس بہ آشا دا

कालाग्नि कोटि रुचिमम्ब षडध्वशुद्धा -
वाह्ला वतेषु भवतीं मम्हतोघ वृषिम् ।
श्यामां घनस्तन तटां सकलीकृतौ च
ध्यायन्त एव जगतां गुरवो भवन्ति ॥३०॥

کلپانتہ اگنہ پاٹھ گہہ سُس ہی موج
سارُدی بیہ قایم کرنس پیٹھ
ریم شامہ روپ سُندر چان دھیان چھی داران
سمسار ناشس پیٹھ ژہ چمکان
چھک ژہ تلہ اُمرتک ورُشن کران
تم موج جگتک گورُو چھی سپدان

विद्यां परां कतिचिद म्बर मम्ब! केचि -
दानन्द मेव कतिचि त्कति चित्त्व मायाम् ।
त्वां विश्व मातु रपरे वय मामनाम
साक्षाद पार करुणां गुरुमूर्ति मेव ॥३१॥

کینہہ چھیُ تہز ودیا کینہہ چھیُ آنند
کینہہ جگت ماتا ساکھیات حدہ روس
کینہہ چھیُ مایا روپ ژہ مانان
دیا سروپ گورو روپہ اسی ژہ زانان

कुवलय दल नीलं बर्बर-स्निग्ध केशं
पृथुतर कुच भारा-क्रान्त कान्तावलग्नम् ।
किमिह बहुभिरुक्तै-स्त्वत्स्वरूपं परं नः
सकल भुवन मातः सन्ततं सन्निधत्ताम् ॥३२॥

کُولیُہ بمگر پاٹھ چھک ماج ژہ چمکونی
سُندر کمر سِس سینہ بوان تم او تھ
زیادہ دنتھی کیا نیری حاصل جگتچ ماجی
دار مُت ژہ ہی موج سُندر کیش
ہی موج آسونی ژہ جگتچ ایشس
سنماکھ مہ روزتم نِت دِتم تیوتھ سندیش

—— ******* ——

सकलजननीस्तवः । ॐ पञ्चमः ।

अजानन्तो यान्ति क्षयमवश्यऽमन्योन्य कलहै-
रमी मायाग्रन्थौ तव परिलुठन्तः समयिनः ।
जगन्मात र्जन्म ज्वर भय तमः कौमुदि ! वयं
नमस्ते कुर्वाणाः शरणमुपयामो भगवतीम् ॥१॥

نہ زانہ ون مورکھ پانہ وینہ رٕڑٕ رٕڑٕ
یمئے متہ وادی مایائی ہند نئی
ہی جگت ماتا اسی جنمکہ جرٕ
اَمرت شرن چھی شُنمکھ ہی موج

اوش پاٹھ ناشہ بہاوس چھُئی واتان
گنڈ نئی پھسِتھ ڈولہ ڈولہ گژھان
بھئے کہ تمہ کوی چُھندرمہ ژہ باسان
گلُ گنڈِتھ اسِ ژہ کُن پرنام چھِ کران

वचस्तर्कागम्य स्वरस परमानन्द विभव-
प्रबोधाकाराय द्युति तुलित नीलोत्पल रुचे ।
शिवस्याराध्याय स्तनभर विनम्राय सततं
नमो यस्मै कस्मैचन भवतु मुग्धाय महसे ॥२॥

وانی کِن وِچارکِن چھک ژہ موج نہ پراونی
یلی اودھ پلہ پوشہ دنتی ترس
شوس چھک آرادینی جگتس بڑھاوان
نمسکار آسنئے تتھ کتھاینہ تیزس

چھک ژہ چیتن سروپ پرمہ آنند
ژِئی شوبھایمان بیہ گیان تہ آنند
گیانہ کریا روپہ تنہ یاری رکن
سارنی موہس اندر اَنان ژہ یمی رکن

लुठद् गुञ्जाहार स्तनभर नमन्मध्य-लतिका
मुदञ्चद्धर्माम्भः कण गुणित नीलोत्पल रुचम् ।
शिवं पार्थ त्राण प्रवण-मृगया कार- गुणितं
शिवा मन्वग् यान्तीं शवर मुहमऽन्वेमि शबरीम् ॥३॥

ریچھ فل ہارژہ نالی تنہ یارِ نمتھئی
پھٹمتہ گومہ سیت گمہ فرژہ شوبونی
ارجنس رچھنے تس شیوس پتہ پتہ
تتھ تندکاری بھائی رولپس ہی موج بوانی

زاولِ کمریس ژہ موج شوبھان
پتلی اوتھ پلہ پوشہ رنگہ چمکان
دارمت تندکاری روپ کیس ژہ آسون
گلُ گنڈِتھ ژِئی اَمرت چھوسے شرن

मिथः केशाकेशि प्रधन निधन स्तर्के घटना
बहुश्रद्धा भक्ति प्रणय विषयाश्चाप्त - विषयः ।
प्रसीद प्रत्यक्षी भव गिरिसुते ! देहि शरणं
निरालम्बं चेतः परिलुठति पारिप्लवमिदम् ॥४॥

عث کرون چھی مس کڈان اکھا اکس   لڑ لڑ تمن پتہ ناش چھو سپدان
ستھاہ پرش بھکتی کن تہ پریمہ کن   شردھائی کن چاتی پوزا کران
ی راج پرکٹ بن اسہ پٹھ پرسن بن   سنتوشٹھ بن اسہ روز بچاوان
سہ چھی چنچل منہ سس تھیہ روستی   تھیہ کراسہ موج نتہ چھی ڈولہ گژھان

शुना वा वद्धे वा खग परिषदो वा यदशानं
कदा केन क्वेति क्वचिदपि न कश्चित्कलयति।
अमुष्मिन्विश्वासं विजहिहि ममाहाय वपुषि
प्रपद्येथा श्चेतः सकलजननीमेव शरणम्॥

ہی منہ پتھ شریرس پٹھ نہ اعتبار   چھوی خوراک نی اگنک یا پنکھی کھیوان
مر وقتہ کتھ جایہ کتھ پاٹھ کمہ طریقہ   پیئی پتھر شریر کر کانہہ نہ زانان
میانی من گژھ شرن جگتچہ ماجہ کن   شریرچ ممتا جلد ژہ تراو ن

अनाद्यन्ता भेद प्रणयरसिकापि प्रणयिनी
शिवस्यासी यत्त्वं परिणय विधौ देवि गृहिणी।
सवित्री भूतानामपि यदुदभूः शैलतनया
तदेतत्संसार प्रणयन महानाटक सुखम्॥

دانت روس بیہ بھید روس پریہ پروپ   آستھ تی چھک شیوسنز پریمہ روپ
داہ ودھی کن ہی دیوی چھک   تس مہادیوسنز گراھنی روپ
ی ہمالہ پتری جون کران ژہ پیدہ   سمسار لیلا چھی چون جشنہ روپ

ब्रुवन्त्येके तत्त्वं भगवति सदन्ये विदुरसत्
परे मातः! प्राहुस्तव सदसदन्ये सु कवय
परे नैतत्सर्वं समभिदधते देवि सुधिय
तदेतत्त्वन्माया-विलसित मशेषं ननु शिवे।

ی دیوی کنہہ چھی ونان ژہ تو روپ   کنہہ چھی ونان ست کنہہ است روپ
ہہ چھی ونان نہہ کھوتہ تہلکہ نامہ موج   کنہہ دانا ونان ست است روپ
ہہ چھی ونان انز دا چہ ژہ اسون   کنہہ ونان یہ ساروی چھو چون پھولنہ روپ

तडित्कोटि ज्योति-द्युति दलित षड्ग्रन्थि गहनं
प्रविष्टं स्वाधारं पुनरपि सुधावृष्टि वपुषा
किमप्यष्टात्रिंशत्किरणसकलीभूत-मनिशं
भजे धाम श्यामं कुचभरनतं बर्बर कचम्

کرُوره اُوزملہ سمان چانی ونتی
سوآوار چکہِ‌س بیہ توره نیران
38 کلا روپ جگت دِکسا دِتھ
تتھ شامہ رُوپس ہی موج بُوانی
کٹھِنن شن گنڈن ژ ٹتھ چھک اژان
امرت ورشن شرُوپہ رکن وسان
تنہ باری نمنھی کیش ژه چمکان
گِری گِری روزه ہا بوسیوا کران

चतुष्पत्रान्तः षड्दल भग पुटान्त स्त्रिवलय-
स्फुरद् विद्युद्वह्नि द्युमणि नियता मद्युतियुते ।
षडश्रं भित्त्वादौ दशदलमथ द्वादश दलं
कलाश्रं च द्व्यश्रं गतवति नमस्ते गिरिसुते ! ॥९॥

چوتُش دلہ کملہ منز نیر تھ شٹھ دلس
اوزُ ملہ چمک زن ساسہ بد سر یہ زن
شٹھ دلہ ژٹتھ دشہ دلہ پتر دواد شہ دلی
دودلہ منزه درامچہ تس کنڈ لنیُ
تَرِکونس منز ساڑھ تری وار سرپا کار
شکھتی کُنڈلنی تِنتی ژه چمکان
پتہ شوڈشہ دلہ پٹھ چھی نیران
ہی گرجی چھُس تتھ سروپس نمسکار کران

कुलं केचित्प्राहु-र्वपुर् कुल मन्ये तव बुधाः
परं तत्संभेदं समभिदधते कौल मपरे ।
चतुर्णां मप्येषा मुपरि किमपि प्राहु रपरे
महामाये ! तत्वं तव कथ ममी निश्चिनुमहे ॥१०॥

کینھہ گیانی ونان چھ ٣٦ تتو روپ
کینھہ ونان چھُی ژه موج شیو شکھتی روپ
کینھہ ونان تھده ہوتہ تھد کوستانیہ سروپ
کینھہ گیانی ونان ژه پرمہ شیو روپ
کینھہ ونان امہ کھوتہ تھد چھو چون روپ
ہی مہا مائی کتھ پاٹھ نشچے
بتہ اسہ کوسنا چھو چون موج سروپ

षडध्वारण्यानीं प्रलय रविकोटि प्रतिरुचा
रुचा भस्मी कृत्य स्वपद कमल प्रह्व शिरसाम् ।
वितन्वानः शैवं किमपि वपु रिन्दीवर रुचिः
कुचाभ्या मानम्रः शिव पुरुषकारो विजयते ॥११॥

شہ وتی سٔس جنگل پرلئے کالس پٹھ
پننن بھکتن یم چانن پچرنن
شیو سنز کوستانیہ سروپ ژه دفتی سس
کرور دفتی سُس ژه پرزلان
پٹھ تھوان مستک چھک تمن رچھان
گیان کریا تنہ باری نمتھ ژه شوبھان

شیو سُند پورشر کارچھک موج ژہ آسونیہ   تتھ شکھتی روپس ژی نمسکار کران

प्रियङ्गु श्यामाङ्गी मरुण तरवासः किसलयां
समुन्मीलन्मुक्ता फल बहुल नेपथ्य कुसुमाम् ।
स्तन द्वन्द्व स्फार स्तबक नमितां कल्पलतिकां
सकृद् ध्यायन्तस्त्वां दधति शिव चिन्तामणि पदम् ॥१२॥

ینگہ پوشہ پاٹھ شامہ سُندرہ شریہ سس
پھولمتہ مختہ بیہ پوشہ لباسہ سس
ہی دیوی چھک ژہ کلپہ تہر آسونیہ
سوی شیو روپی چنتامن رتن

سرخ وستر چھک ژہ دارانی
تنہ بارہ نمتھیٔ ژہ شوبھانی
یُس اکہ لٹہ چون دھیان دارانی
چانی دیلے کن چھو پرا وانی

प्रकाशानन्दाभ्या मविदितचरीं मध्य पदवीं
प्रविश्यैतद् द्वन्द्वं रवि शशि समाख्य कवलयन् ।
प्रविश्योर्ध्वे नादे लय दहन भस्मीकृत कुलः
प्रसादात्ते जन्तुः शिव मकुल मम्ब प्रविशति ॥१३॥

گیان کن کریای کن فیرتھ سوسمنا
اُردہ ناوس اژرت چت ویمرشہ اگن کن
تمہ پتہ چانی انوگرہ کن سادھک

اندر اژرت دو شیونی گراس کران
سارنی چکرن بھسم چھ کران
اِونا شہ شیو پدس پیٹھ چھو واتان

षड़ाधारावर्तै रपरि मिल मन्त्रोर्मि पटलैः-
श्चलन्मुद्रा फेनै र्बहुविध लसद् दैवत झषैः ।
क्रम स्रोतोभि स्त्वं वहसि परनादामृत नदीं
भवानि ! प्रत्यग्रा शिव चिदमृताब्धि प्रणयिनी ॥१४॥

6 چکرہ آولنہ نشہ منتر ملکونشہ
کرم روپہ گاڈو نشہ کرمکہ دریاو نشہ
ہی اموج واتان چھک نِوس دریاوس

مُدررائے کِفر نشہ یلہ ژہ تیران
پرہ ناو امرتہ روپیہ یلہ چھک وسان
شیو روپہ چت سُدرس منتر ژہ روزان

महीपाथो वह्नि श्वसन वियदात्मेन्दु रविभि
र्वपुभि र्ग्रस्तांशै रपि तव कियान्म्ब ! महिमा ।
अमून्यालोक्यन्ते भगवति न कुत्राप्यणुतरा-

मवस्थां प्राप्तानि त्वयि तु परम व्योम वपुषि ॥१५॥

پرتھوی جل اگن والو تہ آکاش   سریہ چندرمہ بیہ جیو آتما
امشو کن بنا ومت چھی ژہ پانئے   کوتاہ چھو موج بوانی چون ہما
چانس پرمہ آکاشکس سروپس   منز چھنہ یم تی کونی وجودس ایوان

मनुष्यास्तिर्यञ्चो मरुत इति लोकत्रयमिदं
भवाम्भोधौ मग्नं त्रिगुण लहरी कोटि लुठितम् ।
कटाक्षश्चेदत्र क्वचन तव मातः करुणया
शरीरी सद्योऽयं व्रजति परमानन्द-तनुताम् ॥१६॥

منش چاروائی تہ دیو تریلوکی   سمسار سندرس منز چھی پھٹمت
کرور یزہ ست رج تمہ لہرن منز   ۳ گن ملکن منز ڈوکہ چھی گیمت
یدوسے یمن منز بنہ کینسی چون کٹا کھ   ہی ماتا سوزیو ادہ چھو واتان
پرمہ آنندکس سروپس سو جلدی   پرمہ پد دیلئے چانی کن چھو پراوان

कला प्रज्ञामाद्यां समय मनुभूतिं समरसां
गुरुं पारम्पर्यं विनय मुपदेशं शिवकथाम् ।
प्रमाणं निर्वाणं परम मतिभूतं परगुहां
विधिं विद्यामाहुः सकल-जननीमेव मुनयः ॥१७॥

ہی جگت ماتا منیشور چھی ژئی ونان   کریا بدھ آد انوبو سمتا
گورہ پرم پراونی ایدیش شو کتھا   پرمان نرمان پرتیکھ تہ انمان
رہسہ گیان مریاداتھ بیہ ودیا شکھتی   جگت ماتا چانی سروپ چھی یم ونان

प्रलीने शब्दौघे तदनुविरते बिन्दु विभवे
ततस्तत्त्वे चाष्टध्वनिभि रनुपाधिन्युपरते ।
श्रिते शाक्ते पर्वण्यनु कलित चिन्मात्रगहनां
स्वसंवित्त्या योगी रसयति शिवाख्यां परतनुम् ॥१८॥

شبد سموہ رکاوتھ پتہ بندہ وبھوگا لتھ   لشٹھ گیان چت آکاشس منز لین کرتھ
تتوس پتھ آٹھ سروپس اوپادھی رستس   نادہ روپہ یرہ امرتس منز رکاوتھ
شاکھتی مارگک آشریہ چھی یم رٹان   چیتن ماترک حسبہ تم ویمرشس کران
سابھاوک شو سروپس تم پراوان   تھدس شو سروپس تم سواد کران

परानन्दाकारा निरवधि शिवैश्वर्य वपुषः

निराकार ज्ञान प्रकृति मुनवच्छिन्न करुणाम् ।
सवित्रीं लोकानां निरतिशय धामास्पद पदां
भवो वा मोक्षो वा भवतु भवतीमेव भजताम् ॥ १९॥

حدہ روس پرمہ آنند رُوپہ چون دھیان — شیو ایشوری روپہ یس مانان
نرو کار گیانہ روسہ حدہ روس دیا روپہ — جنو پیدہ کرُون یسُ ژہ مانان
لتس برابرئ چھئے موکھ یا سمسار — یُس کوُنی روپہ چانی سیوا کران ۔

जगत्काये कृत्वा तमपि हृदये तच्च पुरुषे
पुमांसं बिन्दुस्थं तमपि परनादाख्य गहने ।
तदेस ज्ज्ञानाख्ये तदपि परमानन्द विभवे
महा व्योमाकारे त्वदनुभवशीलो विजयते ॥२०॥

جگتھ کایاے منز چھک ہردیہ ژہ آسوینہ — ہردیس منز چھک آتمہ دیو روپ
آتمہ پرُشس منز بندو ٹھیکت — بندس منز چھک پرہ ناد روپ
نادس منز گیان روپ چون آسوُن — گیانس منز پرمانند وبھو روپ
ہی جگت ماتا جنئے کار تمنئ — یم کرن چون انوبو مہاکاشہ روپ

विद्ये विद्ये वेद्ये विविध समये वेद जननि
विचित्रे विश्वाद्ये विनयसुलभे वेद गुलिके ।
शिवाज्ञे शीलस्थे शिव पदवदन्ये शिवनिधे
शिवे मातर्मह्यं त्वयि वितर भक्तिं निरुपमाम् ॥२१॥

ہی کریا شکھتی گیان شکھتی وودھ — سدا نتھا آچار روپ ہی وید ماتا
ہی وچتر روپی چھک ژہ جگتچ آد — ونیئے کن ژہ پراونی ژہ ویدچ سار
شیو اگنیائے ہنز ژی عمی سبھاو روپی — شیو پد دیوان ژی ہی ماتا
شکھ کوی خزانہ چھک آسونیہ ژہ ہی گنج — بے حد بھکتی دیتہ مے ہی ماتا

विधे मुण्डं हृत्वा यदकुरुत पात्रं करतले
हरिं शूलप्रोतं यदगमय दंसाऽभरणताम् ।
जलंचक्रे कण्ठं यदपि गरलेनाम्बा गिरिशः
शिवस्थायाः शक्ते स्तदिदमखिलं ते विलसितम् ॥२२॥

برہما سُند کلہ الگ کرتھ تتھ کلس   پننے اتھک پاتر بنا وتھ
پننے فیکی کوئی بناوُن زیور   نارابن ترشولس پٹھ اوُرتھ
سخت کھوتر سختی زہر کن تمہ شون   ھُوٹہ لیُس پننوی شو بھراون
شوس پٹھ ٹھیکیچہ امی شکھتی ہند   ئی شُوروی چُونی والس چھو آسُون

विरिञ्च्याख्या मातः! सृजसि हरिसंज्ञा त्वमवसि
त्रिलोकीं रुद्राख्या हरसि विदधासीश्वर दशाम्।
भवन्ती सादाख्या शिवयसि च पाशौघ दलिनी
त्वमेवैकाऽनेका भवसि कृत भेदे गिरिसुते ॥२३॥

برہما ناوہ کن کران پیدہ ترلوکی   نارابنہ ناوہ کن چھک ژہ تتھ رچھان
رودرہ ناوہ کن ژئی چھک کران سمہار   ایشر دشا چھک ژی داوان
سداشیو ناوہ کن جگتس دیوان مکھ   پاشن ہند سموہ ژی گالان
ہی ہمالہ پُتری جئی کونی آستھ   بیون بیون کامیو کن اکھ ژہ باسان

मुनीनां चेतोभिः प्रमृदित कषायै रपि मनाक्
अशक्ये संस्प्रष्टुं चकित चकितै रम्ब सततम्!
श्रुतीनां मूर्धानः प्रकृति कठिनाः कोमलतरे
कथं ते विन्दन्ते पद किसलये पार्वति! पदम् ॥२४॥

ہی ماتا یم منیشور چھی منہ کیو   گلیتو دُوشوسِس آسُونی
تم تی خوچ خوچ موج چانن پادن   سپرش کرنس پیٹھ چھُی نہ ھیکون
اُوپہ نشدھ سُبھاوکن کٹھن پاٹھی تم   چانن پترن کلن ہنزہ جائی پراون

तड़िद्वल्लीं नित्या मृत सरितं पार रहितां
मलोत्तीर्णां ज्योत्स्नां प्रकृति सगुणग्रन्थि गहनाम्।
गिरां दूरां विद्यामविनत कुचां विश्व जननी-
मपर्यन्तां लक्ष्मीमभिदधति सन्तो भगवतीम् ॥२५॥

اوزملہ روپ اپار امرت ندی روپ   نرملہ چندرمہ ترگُن روپ
وانی نشہ دور ژی تھنز ودیا سروپ   گیان کریا تنو نمتھ جگت ماتا روپ
چھُی ونان ست زن ہی دیوی چانی   یم روپ تہ بیہ اننتہ لچھمی روپ

शरीरं क्षित्यम्भः प्रभृति रचितं केवल मिदं -

सुखं दुःखं चायं कलयति पुमांश्चेतन इति ।
स्फुटं जानानोऽपि प्रभवति न देही रहयितुं
शरीराऽहंकारं तव समय बाह्यो गिरिसुते! ॥२६॥

پرتھوی جل اگن والیو تہ آکاش
شکھ دُکھ ایہو زانان پورُشہ چیتن
ہی ہمالہ پُتری سشریرک اہنکار
چھوی ہن پانچہ بوتن شریر بنان
نود پانڈھ جیوا مُوکھ اِنو یہ کران
چھونہ جیو چانی انوگرہ روس تراوان

पिता माता भ्राता सुहृदनुचरः सद्म गृहिणी
वपुः पुत्रो मित्रं धनमपि यदा मां विजहति ।
तदा मे भिन्दाना सपदि भय मोहान्धतमसं
महाज्योत्स्ने! मात भव करुणया सन्निधिकरी ॥२

مُول ماجی بھائی بند نوکر تہ گرہنی
یمی وقتہ ترادنم تمی وقتہ بھئے موہ
ہاپرکاشہ روپ بنتھ دیائے کن ماجی
شریرہ پُتر متر گھرہ بیہ دھن
اندکارس چلد جلد چوڑنی ین
نزدیک ٹھہرت شمکھہ مہ ین

सुता दक्षस्यादौ किल सकल मातस्त्वमुदभूः
स दोषं तं हित्वा तदनु गिरिराजस्य तनया ।
अनाद्यन्ता शम्भोरपृथगपि शक्ति भगवती
विवाहाज्जयासीत्यहह चरितं वेत्ति तव कः ॥

ہی جگت ماتا گوڈہ ینتھ آسکھ
دوشہ کن چھنتن سوئی ژی تراوتھ
آد انتہ رستس لس شیوس نشہ چھکھ
دواہ روسہ وردارتھن ژہ شنکر
دکھی پہرجا پتہ سنز ژی کماری
پتہ نیکھ ژی ہمالہ پُتری
زاہ تہ بوان ہی شکھتی بھگوتی
تم چانی چرتر کوس زانہی

कणास्त्वद्दीप्तीनां रवि शशि कृशानु प्रभृतयः
परंब्रह्म क्षुद्रं तव नियत मानन्द कणिका ।
शिवादि क्षित्यन्तं त्रिवलय तनोः सर्व मुदरे
तवास्ते भक्तस्य स्फुरसि हृदि चित्रं भगवति ॥२

ہی دیوی سوریہ چندرمہ بیہ اگن
پرم برہم چھوی چانی نتہ آنند منترہ
چانی دفتی ہنزو چھی اکھہ ترمیرا
آسون چھوی اکھہ کوکٹ ہشہ لشہ

شوناتھ سندی پیٹھ پرتھوی تولتس تانیہ   سارنی ژه کنڈلنی روپہ روزان
آشچر چھومج چون بھکتن چھک چھیئی   ہردیس منز پرکٹ پاٹھ چمکان

त्वया यो जानीते रचयति भवत्यैव सततं
त्वयैवेच्छत्यऽम्ब त्वमसि निखिला यस्य तनवः ।
गता साम्यं शाम्भु वहति परमं व्योम भवती
तथाप्येवं हित्वा विहरति शिवस्येति किमिदम् ॥३०॥

چانی کن زانان چانی کن تھان سوی   چانی کن سوشیو جگت چھوی بناوان
ژی چھک لتس سروپ چانی کن چھوی   سوی سوامہ بہاوس پیٹھ واتان
یلہ تراوان ژه موج تلہ چانس پرمہ   آکاشس منز لین سپدان

पुरः पश्चादन्त बहि रूपरिमेयं परिमितं
परं स्थूलं सूक्ष्मं सकुलमकुलं गुह्यमगुह्यम् ।
दवीयो नेदीयः सदऽसदिति विश्वं भगवतीं
सदा पश्यन्त्याज्ञां वहसि भुवनक्षोभजननीम् ॥३१॥

بر ونتھ بیتہ اندرہ نبرہ لوک بڈ موڈہ سکھم   شیو روپ شکھی روپ گفتہ نود روپ
دور نزدیک ست است روپہ لیس جگت   تتھ سرشٹی تھت سمہار چھی کرونی
جگتچ آگنیا کار ژه زانہ ایوان

मयूखाः पूष्णीव ज्वलन इव तद्दीप्तिकणिकाः
पयोधौ कल्लोलप्रतिहतमहिम्नीव पृषतः ।
उदेत्योदेत्याऽम्ब त्वयि सह निजै स्तात्त्विक कुले-
भजन्ते तत्त्वौघाः प्रशममनुकल्पं परवशाः ॥३२॥

سریہ سندکرن زن اگنیچ تمبری زن   سمندرن ملکن ہنزہ پانیہ چھکہ زن
تتھے پاٹھ شو پیٹھ پرتھوی تولتس تانیہ   پرتھ کلیانتس اوتھ اوتھ لئے سپدان

विधुर्विष्णुर्ब्रह्मा प्रकृतिरणुरात्मा दिनकरः
स्वभावो जैनेन्द्रः सुगतमुनिराकाशमनिलः ।
शिवः शक्तिश्चेति श्रुतिविषयतां तामुपगतां
विकल्पैरेभिस्त्वामऽभिदधति सन्तो भगवतीम् ॥३३॥

چندرمہ ویشنو برہما بیہ سریہ   مایا سبھاو مت جیو تہ آتما
آکاش والو شو شکتی یم ناو   بھید کن ویدن پیٹھ یم واتان
ست جن یمو ناووکن مِتھ بن   ہی موج بوانی جنی چھی سموان

प्रविश्य स्वं मार्गं सहजदयया देशिकदृशा
षडध्वध्वान्तौघच्छिदुर गणनातीतकरुणाम् ।

परानन्दाकारां सपदि शिवयन्ती मपि तनुं
स्वमात्मानं धन्या स्थिर मुपलभन्ते भगवतीम् ॥३४॥

قدرتی دیائے کن گورو سنزی نظری کن — یم شکھتی مارگس منز پرولیش کران
تمنی رشہ وتی سنس سمار اندکار — دیائے کن موج پھاپ ژہ گالان
پرمانند کوی سکھ دیوان ژہ تمنی — تمئے بہاگوان موج چھئے ژہ پراوان

शिवस्त्वं शक्तिस्त्वं त्वमसि समया त्वं समयिनी
त्वमात्मा त्वं दीक्षा त्वमयमणिमादि गुण गुणाः ।
अविद्या त्वं विद्या त्वमसि निखिलं त्वं किमपरं
पृथक् तत्वं तत्वो भगवति न वीक्षामह इमे ॥३५॥

ژی چھک شوتے ژی چھک شکھتی — ژی سمئے تتھ زانہ وینہ چھک ژی
ژی آتما چھک اپدیش چھک ژی — ژی انما دکھ اشٹہ سدھی ژی
ژی اودیا ودیا جگتک پدا رتھ — ژہ نشہ کانہہ تہ چھی نہ بیون اسی زانان

असंख्यैः प्राचीनैर्जननि जननैः कर्म विलया-
द्गते जन्मन्यन्ते गुरु वपुष मासाद्य गिरिशम् ।
अवाप्याज्ञां शैवीं क्रमतनुरपि त्वां विदितवान्
नयेयं त्वत्पूजा स्तुति विरचनेनैव दिवसान् ॥३६॥

ہی ماتا اسنکھ پران جنمن ہند — کرم گلنہ کن اونیہ جنم پراوتھ
گورو شوسروپ لبتھ شکھتی مرت پراوتھ — وارہ پاٹھہ موج چون سروپ زانتھ
چانی توتا تہ پوجا کروُن بہ روزے — تتھ سیت ژھنہ بہ وِن دِن کٹادتھ

यत् षट्पत्रं कमल मुदितं तस्य या कर्णिकाण्यां
योनि स्तस्याः प्रथित मुदरे यत्तदोंकार पीठम् ।
तस्मिन्नन्तः कुचभर नतां कुण्डलीतः प्रवृत्तां
श्यामाकारां सकल जननीं सन्ततं भावयामि ॥३७॥

سوادھشٹان چکرس منز شتھ دل — پمپوش لیس چھوی موج آسون
تت منز آسون لیس چھو بیجوک کوشس — بیجہ کوشس پیٹھ اومکار چہ جائے
اومکار چہ جائے پیٹھ واس کروتی — لوسہ کنڈلنی چھک ستی ژہ روزان
تس شامہ سندر موتی داروتی — جگت ماتائے ژئی نت یہ سمران

भुवि पयसि कृशानौ मारुते खे शशाङ्के
सवितरि यजमाने प्यष्टधा शक्तिरेका ।
वहति कुचभराभ्यां या विनम्रापि विश्वं
सकल जननि सा त्वं पाहि मामित्युवश्यम् ॥३८॥

پرتھوی جل اگن وایو آکاش — سریہ چندرمہ تجمن یمن آٹھن
چھک کونی شکھتی گیان کریا روپ — تنہ پاری نمتھی جگت چھ داران
سوی چھک سادی جگتچ ژی ماتا — اوشن پاٹھی کوچھ ژہ کرسون پالن

समाप्ता